BEST PRACTICES

शिक्षकों के प्रेरणाप्रद कार्य (नवाचार)

सत्र 2018–19

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, शंकरनगर, रायपुर (छ.ग.)

Scanned by CamScanner

शासकीय पूर्व माध्यमिक विद्यालय
भरुवाडीहकला वि.ख. तिल्दा जिला रायपुर

प्राचार्य डाइट रायपुर श्री आर.के.वर्मा एवं संस्थान के अकादमिक सदस्य श्री एम. आर.साहू , श्री एल.आर. वर्मा द्वारा शासकीय पूर्व माध्यमिक विद्यालय भरुवाडीहकला का निरीक्षण उपरांत प्रधानाध्यापक श्री दिनेश वर्मा को उनके द्वारा किए गए उत्कृष्ट कार्यो के लिए सम्मानित किया गया।

Scanned by CamScanner

BEST PRACTICES

शिक्षकों के प्रेरणाप्रद कार्य (नवाचार)

सत्र 2018–19

प्रेरणास्रोत

आर. के. वर्मा

प्राचार्य

मार्गदर्शक

श्रीमती सुजाता गुप्ता

उपप्राचार्य

समन्वय एवं संकलन

एम. आर. साहू

व्याख्याता

एल. आर. वर्मा

व्याख्याता

विशेष सहयोग

संजीव कुमार सूर्यवंशी

प्रमुख एडमिन नवाचारी गतिविधियाँ समूह

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, शंकरनगर,रायपुर (छ.ग.)
Ph.No. 0771-2442514,Web: dietraipur.scertcg.com,
Email: dietraipur@gmail.com

Scanned by CamScanner

सम्पादकीय

प्रारम्भिक शिक्षा को सुदृढ़ता प्रदान करना तथा भावी पीढ़ी को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा से परिपूर्ण करना अत्यावश्यक है। विद्यार्थियों की प्रारम्भिक स्तर पर आने वाली कठिनाइयों को पहचानना व निराकरण के लिए उपाय करना नितांत आवश्यक है। वर्तमान परिपेक्ष्य में प्रारंभिक शिक्षा की समस्याओं को जानने तथा उन्हें दूर करने के निरंतर प्रयास हो रहे हैं। शिक्षकों का नवाचारी होना तथा कक्षा-कक्ष का वातावरण अधिगमोपयोगी होना अति आवश्यक है।

शिक्षा के व्यावहारिक धरातल पर क्रियान्वयन की महत्वपूर्ण कड़ी विद्यालय एवं शिक्षक है तथा शिक्षा के लिए भौतिक एवं मानवीय संसाधन दोनों ही आवश्यक है। प्रारंम्भिक स्तर पर छात्रों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देने के लिए शिक्षकों को प्रशिक्षित, शैक्षिक अनुसंधानकर्त्ता तथा नवाचारी होना आवश्यक है। जिले में कार्यरत शिक्षकों की समस्याओं एवं शिक्षण संबंधी आवश्यकताओं, शैक्षिक नवाचार तथा उनके गवेषणात्मक प्रवृति के लिए मार्गदर्शन करना डाइट का दायित्व है शिक्षकों को शिक्षण की नई विधियों एवं प्रविधियों से परिचित कराना, उनकी शैक्षिक समस्या का समाधान करना तथा उनमें व्यावसायिक कुशलता लाना इत्यादि।

जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान इन्हीं दायित्वों को पूर्ण करने के लिए संस्थान के क्षेत्रांतर्गत आने वाले विद्यालयों के शिक्षकों में शैक्षिक कौशलों के विकास हेतु सतत् प्रयत्नशील है। ऐसी आशा है, कि प्रस्तुत नवाचार मार्गदर्शिका **"Best practices"** जो शिक्षकों के प्रेरणाप्रद कार्यो का एक संकलन है, उन उद्देश्यों की पूर्ति का एक अंग बन सकेगा व जिले के शिक्षकों में सन्निहित प्रतिभा को उद्घाटित करने, व्यावसायिक कुशलता में उपयोगी सिद्ध होगी तथा इससे उन्हें शैक्षिक दक्षता बढाने में सहायता मिलेगी।

प्रस्तुत संकलन **"Best practices"** के प्रकाशन में अमूल्य सहयोग प्रदान करने वाले नवाचारी गतिविधियाँ समूह के सदस्य, सभी शिक्षकों व अन्य महानुभावों के प्रति हम हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करते हैं। **"Best practices"** के इस अंक को अपने चिंतनशील पाठकों को समर्पित करते हुए डाइट रायपुर गौरवान्वित महसूस कर रहा है पत्रिका के भावी अंक सम्पादन के लिए सारगर्भित सुझावों के हम सदा आकांक्षी रहेंगे।

–एम.आर.साहू , एल.आर.वर्मा *(व्याख्याता) डाइट रायपुर*

Scanned by CamScanner

नवाचारी गतिविधियाँ समूह *(एक परिचय)*

छत्तीसगढ़ राज्य में सरकारी विद्यालयों में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए शिक्षकों का **नवाचारी गतिविधियाँ समूह** पिछले दो वर्षो से प्रयास कर रहा है। हमारा समूह छत्तीसगढ़ राज्य के साथ-साथ देश के अन्य 21 राज्यों के शिक्षकों तक भी **नवाचारी गतिविधियाँ समूह** के सदस्यों द्वारा किए गए शैक्षिक नवाचार, विशेष शिक्षण सामग्री, विशेष गतिविधियाँ व अन्य उत्कृष्ट कार्यो को पहुँचा रहा है।

इस पहल की शुरुआत **श्री संजीव कुमार सूर्यवंशी (शिक्षक) शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला नन्दौरकलाँ, जिला–जाँजगीर–चाँपा** ने किया है। वर्तमान में ये **नवाचारी गतिविधियाँ समूह** के प्रमुख एडमिन हैं। हमारे सभी राज्य, संभाग, जिला एवं विकासखण्ड स्तर पर स्थानीय **नवाचारी गतिविधियाँ समूह** के सदस्यों का समूह, पूर्ण समर्पण व निःस्वार्थ भाव से सोशल मीडिया के द्वारा शिक्षकों को अभिप्रेरित कर रहे हैं।

इस समूह के एडमिन टीम द्वारा छत्तीसगढ़ में 175 Whatsapp group बनाया गया है जो राज्य, संभाग, जिला एवं विकास खण्ड स्तर के हैं। साथ ही राष्ट्रीय स्तर के समूह में 21 राज्यों के शिक्षक इनके प्रयासों से जुड़े हुए हैं। इन सभी समूहों में लगभग 25000 शिक्षक प्रत्यक्ष रुप से शामिल हैं। इसके अलावा FACEBOOK के विभिन्न समूहों में भी इन कार्यो को सुसज्जित प्रारुप में लेखन कर योजनाबद्ध तरीके से प्रसारित किया जा रहा है। जो प्रतिदिन लगभग दो लाख से भी अधिक शिक्षकों तक पहुँच रहा है।

श्री आर.के.वर्मा प्राचार्य एवं समस्त स्टाफ जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, रायपुर (छ.ग.) के हम हृदय से आभारी हैं जिन्होंने हमारे समूह से प्राप्त नवाचारी गतिविधियों व कार्यो को पुस्तिका का रुप देकर नवाचारी शिक्षक-शिक्षिकाओं को मंच प्रदान किया है।

सुश्री पुष्पा शुक्ला (स. शि.)
शासकीय प्राथमिक शाला करचिया
वि.ख.-देवभोग, जिला-गरियाबंद (छ.ग.)
राज्य एडमिन नवाचारी गतिविधियाँ समूह

Scanned by CamScanner

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय वस्तु	नवाचारी शिक्षक	पृष्ठ
1	रोल प्ले (हमारा सौर परिवार)	श्रीमती ऋतु वर्मा	6
2	रासायनिक अभिक्रियाएँ कब और कैसी कैसी	श्रीमती ऋतु वर्मा	7
3	संतुलित भोजन (मॉडल - रंगों की पट्टी मिलाओ संतुलित भोजन पाओ)	श्रीमती ऋतु वर्मा	8
4	पूर्णांको की संक्रियायें	रोहित पटेल	9
5	जन्मदिन मनाना	रोहित पटेल	10
6	गणितीय संक्रियाओं को खेल खेल में हल कर पाना।	रोहित पटेल	11-12
7	ENGLISH में Opposite word का अभ्यास	रोहित पटेल	13
8	शीतकालीन किचन गार्डन।	श्रीमती सुनीता साहू श्रीमती संध्या पैकरा	14-15
9	राष्ट्रीय प्रतीक	प्रीति वर्मा	16
10	प्रकाश सीधी रेखा में चलता है	सोमनाथ साहू	17
11	वायुमण्डलीय दाब का प्रयोग	पद्मनी साहू	18
12	एक्टिविटी के माध्यम से सीखना	श्रीमती नीता साहू	19
13	साइंस प्रोजेक्ट फ़ाइल को सहायक शिक्षण सामग्री की तरह उपयोग करना	हेमन्त कुमार साहू	20-21
14	मोर सुघ्घर वर्णमाला (छत्तीसगढ़ी में)	हेमन्त कुमार साहू	22-23
15	बच्चों के नाम से जाने जाएँगे शाला के पेड़ पौधे	रामसागर कोसले	24-25
16	ट्रिक के माध्यम से याद रखना	बसंत कुमार दीवान	26
17	(वायु दाब की समझ)	कन्हैया साहू	27-28
18	सामुदायिक सहभागिता ने बदली विद्यालय की तस्वीर	समस्त स्टाफ, शा.प्रा.शाला, छिर्रा	29-30
19	चित्र के माध्यम से शिक्षण	केशव सेन	31-32
20	गीत-कविता के माध्यम से बच्चों को हदी के वर्णों का अभ्यास कराना।	अविनाश पात्र	33-34
21	वर्ण, शब्द , वाक्य का अभ्यास कराना।	सुश्री पुष्पा शुक्ला	35-36
22	स्थानीय भाषा में कहानी	सुश्री पुष्पा शुक्ला	37
23	खंडों का खेल : खेल-खेल में गिनती सीखना।	श्रीमती सुचिता साहू	38
24	सौर ऊर्जा (सोलर पैनल) का प्रदर्शन	श्रीमती सुचिता साहू	39-40
25	डाय नग टेबल (स्वयं के व्यय से)	श्रीमती सुनीला फ्रेंकलिन	41
26	बारह खड़ी अभ्यास हेतु गतिविधि	श्रीमती विनती श्रीवास्तव व्याख्याता डाइट	42-43

Scanned by CamScanner

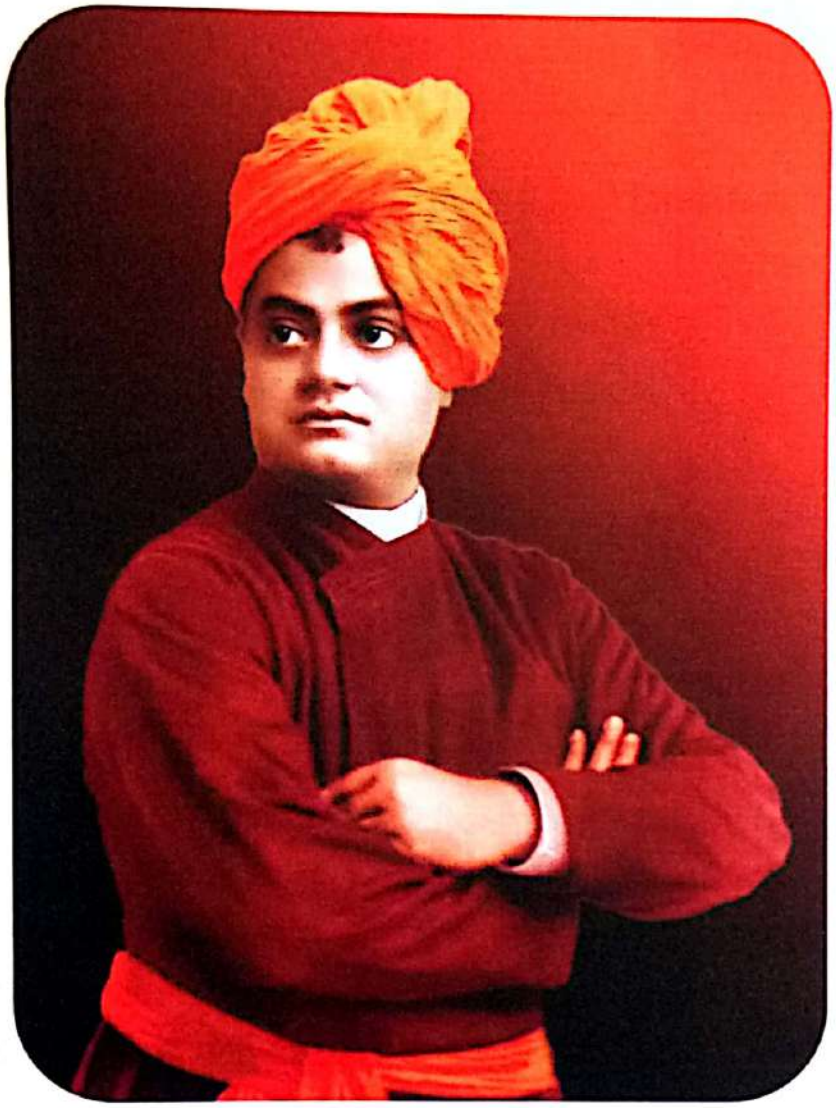

"जब तक जीना तब तक सीखना,
अनुभव ही जगत में सर्वश्रेष्ठ शिक्षक है।"

-स्वामी विवेकानन्द

Scanned by CamScanner

1 रोल प्ले (हमारा सौर परिवार)

श्रीमती ऋतु वर्मा (शिक्षक एल.बी.) शास.क.पू. मा. शाला हथबंद (सिमगा)

उद्देश्य – सौर मंडल के सदस्यों के बारे में समझ विकसित करना।

सामग्री – पुराना गत्ता,रंगीन पेपर,चार्ट पेपर,फैवीकोल,बाँस की पतली छड़ी,चूना आदि ।

निर्माण विधि – गत्ते को सूर्य , ग्रहों के आकार व साइज के आधार पर काट लेते हैं उन्हें आकर्षक बनाने के लिए ग्रहों के रंगों के आधार पर रंगीन पेपर गत्ते पर चिपका देते हैं उसके ऊपर ग्रहों का नाम लिख कर चिपका देते हैं। अब इसे पकड़ने के लिए बाँस की छोटी दो छड़ी लगा देते हैं ताकि बच्चे इसे पकड़ कर अपना रोल प्ले कर सके। फिर खुले मैदान में चूने की सहायता से परिपथ तैयार करते हैं अब रोल प्ले के लिए सभी सामग्री तैयार है।

क्रिया विधि / गतिविधि – इसमें बच्चे अपनी पसंद के ग्रहों को चुन कर ग्रहों के क्रम से खड़े हो जाते हैं सबसे आगे सूर्य बना बच्चा खड़ा हो जाता है इसके बाद ग्रहों के क्रम में हर बच्चा एक दो कर अपना परिचय देते हुए चूने से बने परिपथ में क्रम से खड़े होते जाते हैं इस प्रकार रोल प्ले के द्वारा बच्चे सौरमंडल से परिचित होते हैं।

लाभ –

1. बच्चे रोल प्ले के द्वारा पाठ को आसानी से समझ लेते हैं।
2. कविता के द्वारा बच्चो को सौरमंडल के बारे में जानकारी याद हो जाती है।
3. रुचिकर तथा ज्ञान स्थाई रहता है।

मेरा अनुभव – बच्चे समूह में कार्य करते हैं तथा एक साथ सीखते हैं, ऊबाऊ न होकर रुचिकर है तथा अन्य कौशलों का भी विकास होता है।

Scanned by CamScanner

2 रासायनिक अभिक्रियाएँ कब और कैसी कैसी ।

श्रीमती ऋतु वर्मा (शिक्षक एल.बी.) शास.क.पू. मा. शाला हथबंद (सिमगा)

उद्देश्य – रासायनिक अभिक्रियाओं जैसे- धातुओं और अधातुओं की वायु ,जल और अम्लों के साथ अभिक्रियाओं के लिए शब्द - समीकरण लिखना ।

सामग्री – पुराने पेपर का खाली पैकेट ।

कक्षा / विषय – आठवीं (विज्ञान)

निर्माण विधि – पेपर का पुराना खाली पैकेट लेते हैं उसे एक साइज से काट लेते हैं उसमें स्केच पेन के सहायता से विभिन्न रासायनिक संकेत और रासायनिक सूत्र व संकेत (जैसे- Mg, S, Zn, -, +, =, →, ↑ , ↓) आदि चिन्हों को लिख लेते हैं। इस प्रकार हमारा रासायनिक समीकरण बनाने के लिए पेपर तैयार हो जाता है ।

क्रिया विधि / गतिविधि – इस गतिविधि को बच्चों को समूह में व एकल भी कराया जा सकता है। बच्चों को इसमें रासायनिक संकेत व सूत्रों को पहचानने को कह सकते हैं तथा विभिन्न रासायनिक समीकरण बनाने को भी कह सकते हैं। बच्चों को धातुओं व अधातुओं की जल वायु और अम्लों के साथ होने वाले अभिक्रियाओं के लिए समीकरण बनाने को कह सकते हैं जिसमें बच्चे पेपर में दिए गए निर्देश के अनुसार रासायनिक समीकरण को जमाते हैं व उनकी पहचान तथा व्याख्या करना सीखते हैं ।

लाभ –

1. बच्चों में आत्मविष्वास तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास होता है ।
2. बच्चे एक दूसरे को देख कर सीखते हैं ।
3. बच्चो में अभिव्यक्ति कौशल का विकास होता है ।
4. जो विषय बोझिल लगता है उसे इस तरीके से रुचिकर व सरल बनाया जा सकता है ।
5. गतिविधि द्वारा पठन कौशल का विकास करना ।

मेरा अनुभव – नये शिक्षण विधियों से बच्चो के सीखने की गति में वृद्धि होती है ।

Scanned by CamScanner

3 संतुलित भोजन

श्रीमती ऋतु वर्मा (शिक्षक एल.बी.) शास.क.पू. मा. शाला हथबंद (सिमगा)

उद्देश्य – खेल खेल में शिक्षा के द्वारा पठन कौशल का विकास करना।

वैज्ञानिक अवधारणा की समझ को दैनिक जीवन मे प्रयोग करना।

संतुलित भोजन हेतु भोज्य पदार्थों का चयन करना।

(मॉडल - रंगों की पट्टी मिलाओ संतुलित भोजन पाओ)

कक्षा / विषय – छटवीं (विज्ञान)

आवश्यक सामग्री – पुराना गत्ते, लोहे की कील , जूते का पुराना डिब्बा , चार्ट पेपर , फैवीकोल , स्केच पेन आदि।

निर्माण विधि – पुराने गत्ते को चार अलग अलग वृत्त के आकार में काट लेते हैं इसमें अलग दो रंगों का चार्ट पेपर काट कर चिपका देते हैं। हर एक गत्ते में चित्र के अनुसार संतुलित भोजन के तत्व शरीर के लिए कार्य तथा संतुलित भोजन के स्रोत को लिख देते हैं अब चारों गत्ते के बीच में छेद कर देते हैं तथा पुराने जूते का डिब्बा लेकर बीच में कील को स्थाई रुप से लगा देते हैं चारों गत्ते घूमने वाले होते हैं अब चारों गत्ते को मिलाते हुए विभिन्न रंगों की पट्टी लगा देते हैं इस प्रकार हमारा **TLM** तैयार हो जाता है।

क्रिया विधि / गतिविधि – कक्षा में बच्चों के बीच इस **TLM** को रख देते हैं और बच्चों को निर्देशित करते हैं कि रंगों की पट्टी मिलाओ संतुलित भोजन पाओ। बच्चे जब रंगों की पट्टी को मिलाते हैं तब इन्हें संतुलित भोजन का चार्ट प्राप्त होता है इस प्रकार बच्चे खेल खेल में संतुलित भोजन की अवधारणा को समझ पाते हैं। जब बच्चों की समझ बन जाती है तब रंगों की पट्टी को हटा कर उनके समझ की जांच की जा सकती है।

लाभ –

1. बच्चो में वैज्ञानिक सोच विकसित होती है।
2. खेल खेल में बच्चे जल्दी सीख जाते हैं।
3. विषय सरल, रुचिकर व समझ स्थाई बनती है।
4. स्वास्थ्य के प्रति जागरुकता व तथ्यों की समझ बनती है।

Scanned by CamScanner

4 पूर्णांको की संक्रियायें

रोहित पटेल (शिक्षक-एल.बी.) शा.पू.मा. शा. नगेड़ी (कसडोल)

उद्देश्य – बच्चे खेल खेल में पूर्णांक संख्याओं पर जोड़-घटा की संक्रिया कर सकेंगे।

आवश्यक सामग्री – कार्ड बोर्ड ,वाटर कलर ,कैंची, पेन्सिल आदि।

बनाने की विधि – सर्व प्रथम हम एक पुराना कार्ड बोर्ड लेते हैं। उसमें बहुत सारे छोटे छोटे वृत्त बना लेते हैं, पेंसिल से चिन्ह लगा लेते हैं। अब सारे वृत्तों को कैंची की सहायता से काट लेते हैं। अब आधे वृत्तों को अपनी पसंद से लाल व आधे वृत्तों को हरे रंग से रंग देते हैं। अब हरे रंग के सिक्कों में धन का चिन्ह बना लेते हैं और लाल रंग वाले सिक्कों में ऋण का चिन्ह काले रंग से बना लेते हैं। इस प्रकार 20 धन वाले व 20 ऋण वाले सिक्के बना लेते हैं।

क्रिया / गतिविधि – कक्षा में बारी बारी से बच्चों को ब्लैक बोर्ड में एक एक सवाल देकर टी. एल. एम. के द्वारा हल करने को कहते हैं। बच्चे रुचि से करते हैं।

उदाहरण – (1) $-6+4=?$

इसको हल करने के लिए हम एक छात्र को बुलाते हैं। छात्र आता है और सवाल को पढ़ कर ऋण वाले छः सिक्के पहले निकालता है। फिर धन वाले चार सिक्के निकालता है। अब एक धन व एक ऋण सिक्के की जोड़ी बनाते जाता है। अंत में दो ऋण के सिक्के बच जाते हैं। जो कि हमारा उत्तर होता है।

हम बच्चों को पहले से हल करके बता दिये रहते हैं कि एक धन व एक ऋण की जोड़ी बनाते हैं उसका मान शून्य हो जाता है। जो आपके पास सिक्के बचते हैं वही आपके सवाल का हल होगा।

लाभ – बच्चे रुचि लेकर संक्रियायें सीखते हैं। बच्चों में गणित के प्रति भय नहीं रहता है।

मेरा अनुभव – कक्षा में सीखने का माहौल भय मुक्त एवं रुचिकर बन जाता है , जिससे बच्चे उत्साह पूर्वक गतिविधि में हिस्सा लेते हुए सीखते हैं।

Scanned by CamScanner

5 जन्मदिन मनाना

रोहित पटेल (शिक्षक एल. बी.) शा.पू.मा. शा. नगेड़ी (कसडोल)

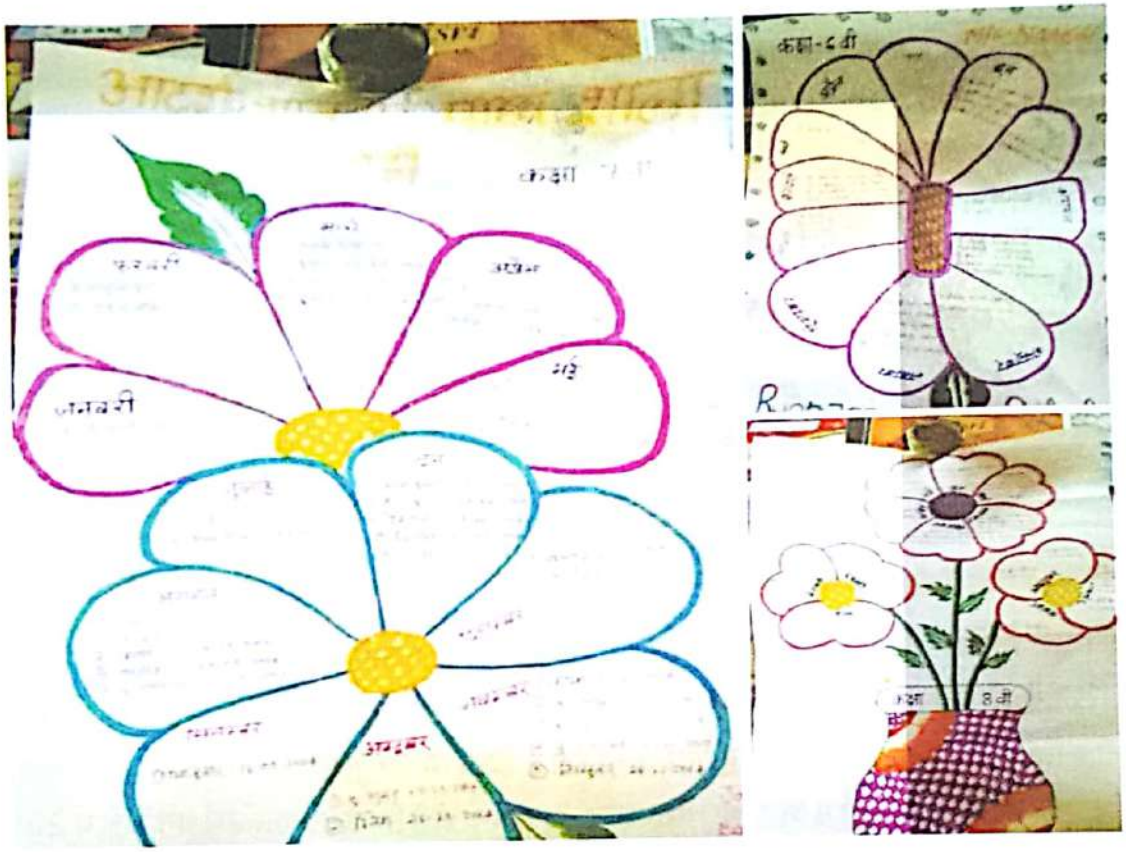

बच्चों के जन्मदिन को याद रखने व जन्मदिन को यादगार बनाने के लिये हमारी शाला में किया गया नवाचार।

1. बच्चों के जन्मदिन को माहवार, कक्षावार लिखकर कक्षा में चस्पा किया गया है।
2. जिस छात्र या छात्रा का जन्मदिन होता है उसे अपने मनपसंद कपड़े पहनकर आना होता है ताकि उसे बिलकुल स्पेशल दिन जैसा महसूस हो।
3. स्कूल की ओर से बच्चे को एक कापी, पेन या अन्य सामान गिफ्ट दी जाती है।
4. प्रार्थना सभा में ही बच्चे को गुलाल लगाकर **Happy birthday song** गाकर बच्चे को बधाई दी जाती है। साथ ही मुँह मीठा कराया जाता है।
5. साथ ही संबंधित छात्र को उसका जन्मदिन याद रखने हेतु शाला की ओर से 'जन्मदिन की शुभकामना' कार्ड भेंट की जाती है।
6. इससे बच्चे स्कूल और शिक्षकों से जुड़ाव महसूस करता है। स्कूल उन्हें अपने घर जैसा लगने लगता है।

Scanned by CamScanner

6 पूर्णांको की संक्रियायें

रोहित पटेल (शिक्षक एल.बी.) शा.पू.मा. शा.नगेड़ी (कसडोल)

उद्देश्य – बच्चे खेल खेल में प्रेक्टिकल द्वारा पासा खेल के माध्यम से जोड़ना, घटाना, गुणा भाग का अभ्यास करके दक्ष होंगे।

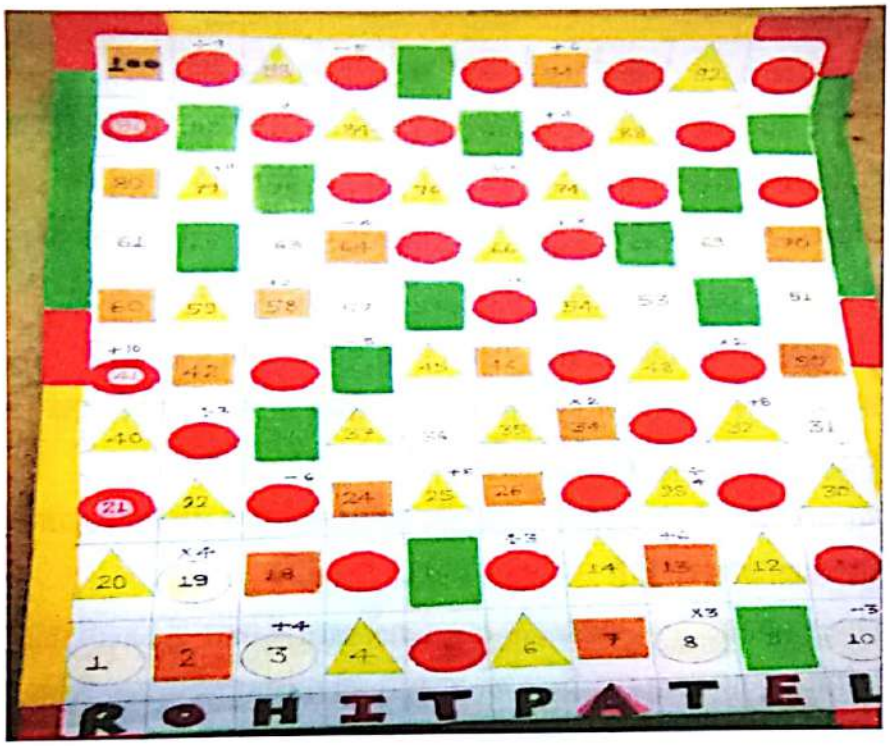

आवश्यक सामग्री – चार्ट पेपर, पासा, कार्ड बोर्ड , वाटर कलर, कैंची , पेन्सिल आदि।

बनाने की विधि – बनाने की विधि बहुत आसान है।

1. सबसे पहले एक पुराना कार्ड बोर्ड लेकर उसे कैंची की सहायता से चतुर्भुज के आकार में काट लेते हैं।
2. अब चार्ट पेपर को भी समान आकार में काटकर डिब्बा डिब्बा बना लेंगे।
3. प्रत्येक डिब्बा में आवश्यकतानुसार त्रिभुज, वर्ग, आयत व वृत्त का चित्र बना लेंगे।
4. सभी को रंग बिरंगे रंग लेंगे । इस बात का ध्यान रखेंगे की एक प्रकार की आकृति को एक ही रंग से रंगेंगे।
5. अब सभी आकृतियों के अंदर नीचे से ऊपर की ओर साँप सीढ़ी की भाँति 1 से 100 तक गिनती लिख लेंगे। साथ ही बीच-बीच में +4, 6, -2 भाग 5 आदि चिन्ह वाले अंक भी लिख देते हैं।
6. लकड़ी का एक पासा बनाकर 1 से 6 तक गिनती लिख लेंगे। अब इस चार्ट पेपर को कार्ड बोर्ड में चिपका देते हैं। हमारा खेल तैयार है।

Scanned by CamScanner

कक्षा या स्तर – प्राथमिक स्तर कक्षा 3, 4, 5

लर्निंग आउटकम –

1. गणितीय संक्रियाओं को (जोड़ना,घटाना,गुणा,भाग) हल कर पाना।
2. ज्यामितीय आकृतियों को पहचानना। जैसे-त्रिभुज,वर्ग,आयत ,वृत्त ।

क्रिया / गतिविधि – कक्षा में बारी बारी से बच्चों को इस पासा खेल को समूह में खेलने का अवसर देते हैं। बच्चें रुचि से खेलते हुए 'संक्रियायों को हल करते हैं व 'गणितीय ज्यामिति आकृतियों को पहचान' करते जाते हैं।

खेल की विधि:–

1. इस खेल को एक बच्चा पासा फेंककर शुरु करता है। हर एक बच्चे के पास अपनी एक गोटी होती है। पासा में जितना अंक आता है, बच्चा उतने खाने अपनी गोटी आगे चलता है।
2. मान लीजिये पहले बच्चे के पासे में 3 आया तो वह बच्चा अपनी गोटी 3 कदम चलेगा। 3 में + 4 लिखा हुआ है इसका मतलब बच्चे को 3 में 4 और प्लस करना है । बच्चा जोड़ेगा और 7 में पहुँच जायेगा। इसी प्रकार बाकी बच्चे भी बारी-बारी से पासा चलकर आगे बढ़ते जायेंगे।
3. यदि धन और गुणा चिन्ह वाले खाने में आता है , तो सीढ़ी चढ़ने की भाँति बच्चा संक्रिया हल करके आगे ऊपर की ओर बढ़ जाता है।
4. यदि ऋण या भाग चिन्ह में आ जाता है तो ये साँप काटने के समान संक्रिया हल करने के पश्चात नीचे की ओर वापस चला जाता है।
5. यदि बच्चा गोटी आगे बढ़ाने के बाद केवल संख्या वाले खाने में जाता है जिसमें कोई संक्रिया का चिन्ह नहीं होती तो वह बच्चा उस डिब्बे की आकृति को पहचानकर बताता है कि वह कौन सी आकृति है।
6. इस प्रकार बच्चे खेल खेलते हुए आगे बढ़ते जाते हैं। जो बच्चा सबसे पहले 100 तक पहुँच जाता है वह खेल का विजेता होता है।

इस प्रकार हम इस '**संक्रिया पासा गेम**' के टी.एल.एम. द्वारा बच्चों को संक्रियाओं को हल करने में दक्ष बना सकते हैं। साथ ही गणितीय आकृतियों की पहचान भी होती है।

लाभ – बच्चे रुचि लेकर खेल खेल में गणित के माडल के माध्यम से सीख रहे हैं।

मेरा अनुभव – कक्षा का माहौल भयमुक्त एवं रुचिकर बन जाता है, जिससे बच्चे उत्साहपूर्वक गतिविधि में हिस्सा लेते हुए सीखते हैं।

विशेष – गणित के प्रति बच्चों का भय खत्म होना। खेल खेल में गणित सीखना।

Scanned by CamScanner

7 शीर्षक – ENGLISH में Opposite word का अभ्यास

रोहित पटेल (शिक्षक एल. बी.) शा.पू.मा. शा. नगेड़ी (कसडोल)

उद्देश्य – बच्चे खेल खेल में अंग्रेजी के अपोजिट वर्ड को सीख सकेंगे।

सामग्री – चार्ट पेपर या ड्राइंग सीट, स्केच पेन, गोंद या फेविकोल, कटर।

निर्माण विधि – चार्ट पेपर में word एवं उसके opposite word को लेकर कर एक बड़े ड्राइंग सीट में इस प्रकार चिपकाया जाता है कि सभी भी word को पलटने पर उसके नीचे उसका opposite word दिखे।

सम्बंध कक्षा या स्तर – प्राथमिक स्तर एवं पूर्व माध्यमिक।

लर्निंग आउटकम –

Identifies opposites like "day/night", close/open and such others.

क्रिया / गतिविधि – इसमें कक्षा में समूह बनाकर शिक्षण कार्य होता है। एक समूह के बच्चे पूछेंगे तो दूसरे समूह वाले जवाब देते हैं। किसी समूह के एक छात्र से चार्ट पेपर में चिपके किसी भी word का opposite word दूसरे समूह द्वारा पूछा जाता है यदि वो जवाब देता है तो दूसरे word के बारे में पूछते हैं और यदि जवाब न दे पाया तो word को पलटने के लिए कहा जाता है और उसके पलटने पर उसके नीचे उसका opposite word दिखाई देता है जिसे सम्बन्धित छात्र पढ़कर बताता है। यह प्रक्रिया लगातार चलती रहती है।

लाभ –

1. बच्चे रुचि लेकर खेल खेल में अंग्रेजी सीख रहे हैं।
2. बच्चे opposite word को समझ रहे हैं।
3. अंग्रेजी शब्द भंडार में वृद्धि हो रहा है।

मेरा अनुभव – कक्षा का माहौल भय मुक्त एवं रुचिकर बन जाता है जिससे बच्चे उत्साहपूर्वक गतिविधि में हिस्सा लेते हुए सीखते हैं।

विशेष – अंग्रेजी के प्रति बच्चों का भय खत्म होता है और रुचि पूर्वक पढ़ते हैं।

Scanned by CamScanner

8 किचन गार्डन

श्रीमती सुनीता साहू, श्रीमती संध्या पैकरा (सहायक शिक्षक)
शास. प्रा. शाला, कानाकोट (पलारी)

उद्देश्य – विद्यालय की खाली जगह में सब्जी उगाकर बच्चों को ताजा एवं हरी सब्जी मध्यान्ह भोजन में कराना एवं बाग़वानी कार्य सिखाना।

कक्षा / स्तर – प्राथमिक एवं पूर्व माध्यमिक सम्बंधित पाठ / विषय - विज्ञान एवं पर्यावरण

गतिविधि – इसके तहत स्कूल में खाली जगह पर सब्जी-भाजी लगाई जाती है जिससे बच्चे बागवानी करना सीखते हैं। हाथ धोने, पानी पीने व बर्तन धोने का सीवेज पौधों की सिंचाई में लिया जाता है। आवश्यकतानुसार समय समय पर सब्जी में पानी डालकर भी देख-रेख किया जाता है।

लाभ –

1. खाली जगह का सही उपयोग ।
2. बागवानी लगाकर देखरेख सीखना।
3. ताजी सब्जी का उपयोग मध्यान्ह भोजन में करना।
4. किचन से निकलने वाले बेकार चीजो का खाद बनाकर उपयोग करना।
5. बच्चो को पौधों की देख भाल करने की जिम्मेदारी देना।

Scanned by CamScanner

विषय आधारित अन्य लाभ –

1. बच्चे पौधो की देख रेख कर पर्यावरण से जुड़ कर उसके लाभ ले रहे हैं।
2. फलदार व फूलदार पौधों में अंतर।
3. पत्तियों के विन्यास, जड़ों के प्रकार, पत्तियों की जमावट आदि विज्ञान सम्बंधी बातों की जानकारी मिल रही है। शुद्ध पर्यावरण में शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं।

विशेष – किचन गार्डन के इस पूरे कार्यक्रम में शाला को सुन्दर एवं हरा भरा बनाने में सभी का बहुत महत्त्वपूर्ण योगदान है । विद्यार्थियों के साथ ही शाला के अन्य गुरुजनों व प्रधानपाठक का भी सहयोग मिलता है ।

मेरा अनुभव – विद्यालय में किचन गार्डन होने से बच्चे पौधों की देखरेख करना सीख रहे हैं व पर्यावरण के प्रति जागरुक हो रहे हैं। साथ ही समय-समय पर विषयगत पढ़ाई भी हो रही है।

Scanned by CamScanner

9 राष्ट्रीय प्रतीक

प्रीति वर्मा (सहायक शिक्षक) नवीन प्राथमिक शाला भाटापारा मांढ़र (धरसीवा)

उद्देश्य – अवलोकन व अनुभवों की सहायता से राष्ट्रीय प्रतीकों को पहचानते हैं।

बच्चे राष्ट्रीय प्रतीकों के बारे में जानेंगे एवं उसके विशेषताओं से परिचित होंगे तथा राष्ट्रीय प्रतीकों के प्रति सम्मान व सुरक्षा की भावना उत्पन्न होगी।

सामग्री – खाली प्लास्टिक बोतल, प्लास्टिक चम्मच, गत्ता, खराब कागज, मिट्टी, रंग, चार्ट पेपर, गोंद, कैंची, फोम, शैलो टेप।

निर्माण विधि –

मोर –

1. एक खाली प्लास्टिक की बोतल को मोर के पंख की आकृति मे काट कर उस पर रंग लगा दो, एक पालीथिन मे खराब कागज को भर कर उसे चार्ट पेपर मे लपेट कर रंग देंगे फिर एक बोतल को सामने लगा कर रंग देंगे, बोतल के ढक्कन को निकाल कर फोम के गोल आकृति को गोंद से चिपका देंगे, मोर का चोंच बनाकर, फिर चार्ट पेपर के पीछे में पंख लगाते गये।
2. चम्मच को मोर के पंख का रंग लगाकर गत्ते को मोर की आकृति का काट कर रुई को गोल कर नीले रंग से रंगकर चिपका देंगे व मोर के पंख को लगा देंगे इस तरह मोर तैयार हो गया।

बाघ – मिट्टी से बाघ बनाकर रंग देंगे।

कमल फूल – बोतल को कमल की पंखुड़ियों की आकृति का काट कर रंग देंगे कमल तैयार हो गया।

गतिविधि – बनाए गए टी.एल.एम. का प्रदर्षन करते हुए बच्चों को राष्ट्रीय प्रतीकों से पहचान कराना और विशेषता बताया जाना।

मेरा अनुभव – बच्चे नवीन पद्धति को देखने व करने के लिए उत्सुक रहते है।

विशेष – यह टी.एल.एम. कबाड़ से जुगाड़ के द्वारा बनाया गया है।

Scanned by CamScanner

10 प्रकाश सीधी रेखा में चलती है

सोमनाथ साहू (शिक्षक) शा.पू.मा.शाला अकोली कला (आरंग)

उद्देश्य – प्रकाश की किरण हमेशा सीधी रेखा में ही गति करती है। बच्चे स्वयं क्रियाकलाप करके प्रकाश की गति को समझते हैं।

निर्माण का उद्देश्य – प्रकाश किरण की गति को समझना।

आवश्यक सामग्री – प्लाई का लंबा चौकोन टुकड़ा, गत्ते, कील, तेल में भीगी फुलबत्ती (मोमबत्ती, लेजर लाईट आदि) माचिस।

निर्माण क्रिया की विधि – गत्ते के तीन बराबर चौकोन टुकड़े काटकर तीनों गत्तों के बीच में एक बराबर आकार का छेद कर देते हैं। उसके बाद प्लाई का लम्बा चौकोन टुकड़ा लेकर कील की सहायता से तीनों गत्तों को क्रमशः चित्रानुसार स्थापित कर देते हैं।

कक्षा या स्तर – उच्च प्राथमिक स्तर।

विषय / पाठ – विज्ञान, प्रकाश।

उपयोग के तरीके –

1. टी. एल. एम.को कक्षा में ले जाकर प्रदर्शन करना ।
2. तीनों गत्तों के छेद को एक सरल रेखा में स्थापित करना फिर बत्ती जलाकर देखना कि प्रकाश किरण दिखाई दे रही है कि नहीं ।
3. जब तीनों गत्ते की छेद एक सरल रेखा में होती है तो प्रकाश किरण अंतिम गत्ते की छेद से गुजरती हुई दिखाई देता है जब बीच के गत्ते को खिसका देते हैं तो प्रकाश किरण अंतिम गत्ते के छेद से गुजरती हुई दिखाई नही देती है इससे यह सिद्ध होता है कि प्रकाश की किरण सीधी रेखा में चलती है।

लाभ – बच्चों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास होता है।

मेरा अनुभव – बच्चे रुचिपूर्वक क्रियाकलाप को करते हैं।

विशेष – बच्चों में कक्षा में प्रदर्शन करने की क्षमता विकसित होती है।

Scanned by CamScanner

11 वायुमण्डलीय दाब का प्रयोग

पद्मनी साहू (शिक्षक) शा.पू.मा.शाला परसकोल (कोसरंगी-आरंग)

उद्देश्य – विज्ञान के सिद्धांतों को सत्यापित करना ।

अनुपयोगी वस्तु से उपयोगी वस्तु बनाने के लिए बच्चों में चिंतन का विकास करना ।

आवश्यक सामग्री – खाली प्लास्टिक बोतल, गर्म पानी ।

निर्माण विधि – केवल अनुपयोगी खाली बोतल लेना है।

गतिविधि – खाली बोतल में गर्म पानी सावधानी पूर्वक धीरे-धीरे भरेंगे। बोतल को बंद कर कुछ देर रहने दें।

बोतल से पानी बाहर निकाल दें। उसके बाद बोतल को बंद कर दें। हम कुछ समय बाद देखते है कि बोतल का आकार परिवर्तित हो कर पूरी तरह पिचक जाता है ।

सामान्य अवस्था में बोतल की आकृति सामान्य थी।

जब अंदर व बाहर वायु का दाब बराबर था बोतल में गर्म पानी डालने पर अंदर की हवा गर्म हो कर फैलती है और कुछ हवा बोतल से बाहर हो जाती है और वायु ठंडी होने के बाद सिकुड़ती है। जिससे अंदर का वायु दाब कम हो जाता है। बोतल बन्द करने पर बाहर का वायुमण्डलीय दाब ज्यादा हो जाता है जो कि बोतल की सतह पर दाब डालने लगता है और बोतल पिचक जाता है।

लाभ – योग द्वारा बच्चे आसानी से विज्ञान के सिद्धांत को जान पायेंगे।

मेरा अनुभव – विषय रुचिकर बनता है। खोजी प्रवृत्ति का विकास होता देखा गया है।

Scanned by CamScanner

12 रचनात्मक गतिविधियाँ

नीता साहू (सहायक शिक्षक) शास. प्राथमिक शाला
रावणभाठा, मंदिर हसौद (आरंग)

उद्देश्य– खेल-खेल में सीखना। कक्षा का माहौल रोचक बनाना।

सामग्री – ड्राइंग शीट, पेपर, फेविकोल, कार्टून, रंगोली, स्केच पेन।

क्रिया / गतिविधि – सिर्फ किताबों के अध्यापन से बच्चे ऊबने लगते हैं, खासकर कमजोर बच्चे और उनकी कक्षा में रुचि घटती जाती है। इस माहौल को बदलने में इस प्रकार की गतिविधि बहुत ही कारगर रही। इस गतिविधि में ऐसे सामानों का उपयोग किया गया जो बहुत ही आसानी से और कम दामों में मिल जाता है और इस गतिविधि को कमजोर बच्चों ने भी आसानी से पूरा किया जिससे उनके आत्मविश्वास में वृद्धि हुई।

लाभ –

1. समूह में कार्य करना सीखे।
2. हर प्रकार के स्तर के बच्चों ने इस गतिविधि में भाग लिया।
3. कक्षा का माहौल रोचक हुआ।
4. कक्षा का माहौल सौहार्द्र पूर्ण हुआ।
5. रचनात्मक गतिविधि से सीखने की गति बढ़ी है।
6. उपस्थिति में सुधार।

मेरा अनुभव – कक्षा का माहौल भय मुक्त हुआ और बच्चों का बौद्धिक विकास हुआ।

विशेष – खेल खेल में शिक्षा से शैक्षिक वातावरण में उल्लेखनीय परिवर्तन हुआ।

Scanned by CamScanner

13 साइंस प्रोजेक्ट फ़ाइल को सहायक शिक्षण सामग्री की तरह उपयोग करना, प्रोजेक्ट को ज्यादा भावकारी बनाना।

हेमन्त कुमार साहू (सहायक शिक्षक) शासकीय कन्या उ.मा. वि. अभनपुर

उद्देश्य – साइंस के प्रति रुचि बढ़ाना, विज्ञान की विशालता को समझना, बच्चों में सृजनात्मक क्षमता का विकास करना, विज्ञान के अवधारणाओं को स्पष्ट करना, शिक्षण को प्रभावकारी बनाना।

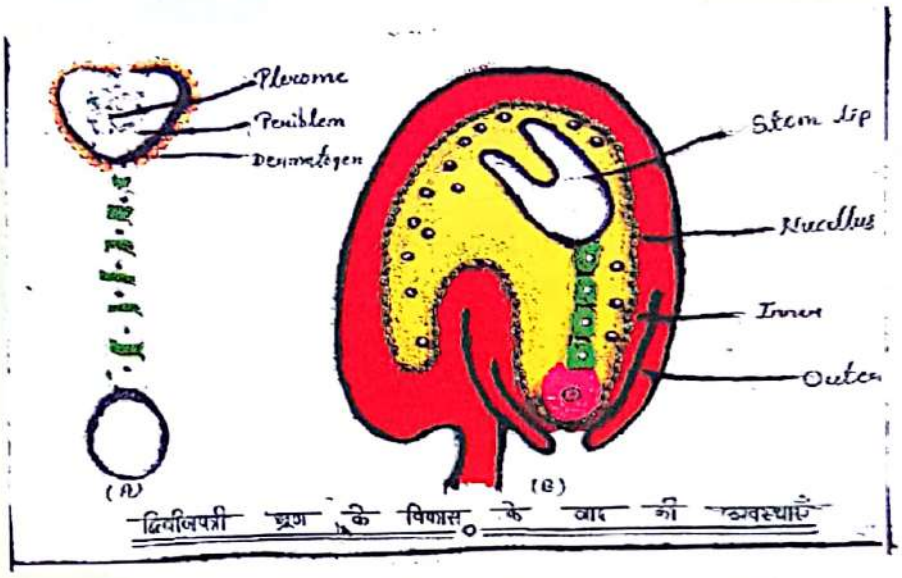

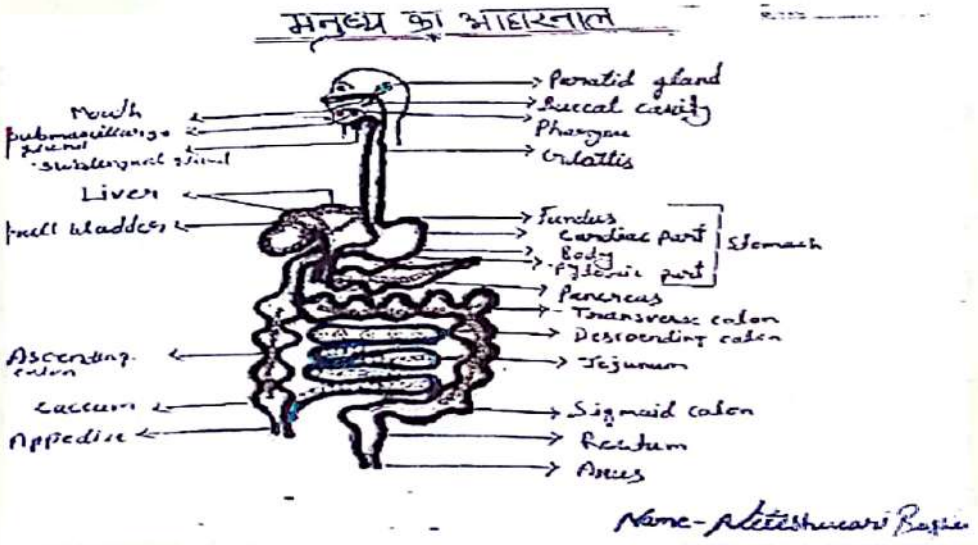

सामग्री – इस प्रोजेक्ट में मैंने बच्चों को अपने घरों से निम्न अनुपयोगी सामग्री का उपयोग करने की सलाह दी पुराने बटन, कपड़े, खाद्यान्न जैसे-दाल, चाँवल, बीज, दवाई टेबलेट, चूड़ियां, रुई और अन्य सामग्रियां जिनको कबाड़ समझ के घर से बाहर फेंक देते हैं।

Scanned by CamScanner

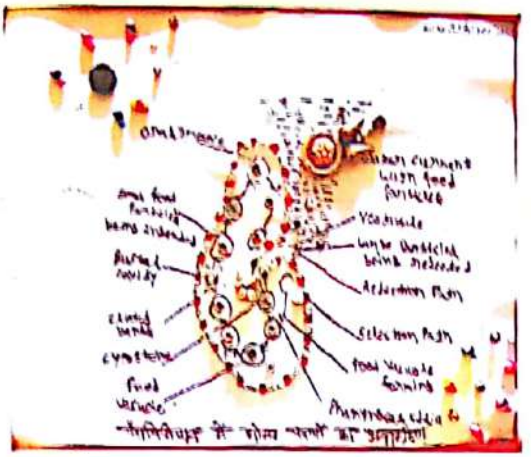

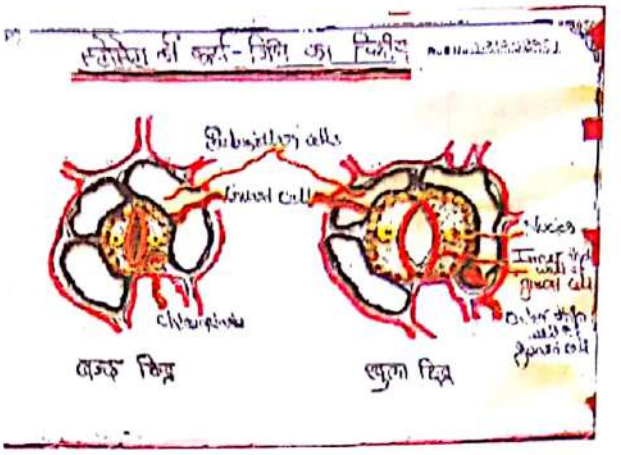

गतिविधि / क्रिया – बच्चे बहुत ही मेहनत से साइंस के प्रोजेक्ट फ़ाइल तैयार करते हैं पैसे भी खर्च करते हैं पर उसका कोई उपयोग नहीं रह जाता, प्रैक्टिकल एग्जाम के बाद कई स्कूल में तो ये कबाड़ के रुप में पड़ा रहता है तो मैंने सोचा कि क्यों न इन प्रोजेक्ट फ़ाइल को सुंदर और उपयोगी बनाया जाए और बच्चों के खोजी प्रवृत्ति को आगे बढ़ने का मौका दिया जाए।

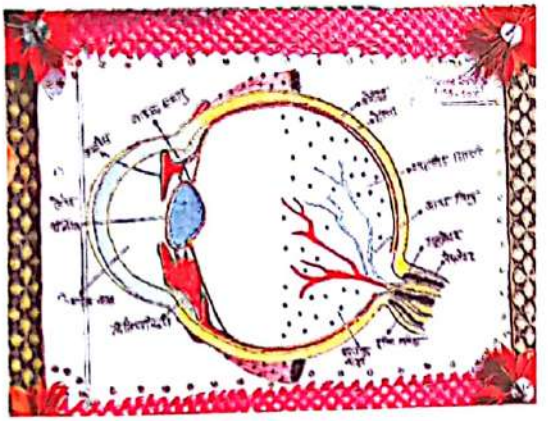

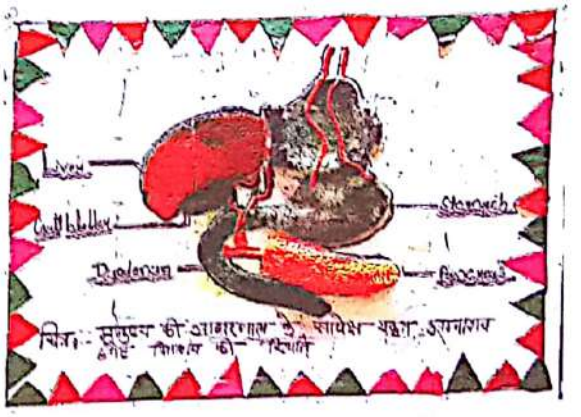

इसके लिए मैंने अपने कक्षा के बच्चों से कहा कि अपने साइन्स प्रोजेक्ट को साइंस के ही विभिन्न चित्रों के द्वारा सजायें। साथ ही उन्हें कहा कि प्रोजेक्ट फाइल के पहले पेज को अपने घरों के अनुपयोगी वस्तुओं से सजायें। कुछ दिनों का समय दिया और बच्चों से बहुत से सुंदर और शैक्षणिक प्रोजेक्ट फ़ाइल बनवाये कुछ जगह उनको दिक्कत हुई तो मैंने कुछ सहयोग भी किया ।

लाभ – इस प्रकार से प्रोजेक्ट निर्माण करवाने पर बच्चों को अनुपयोगी वस्तुओं में विज्ञान दिखने लगा और सभी ने अपने-अपने तरीके से विज्ञान के विभिन्न आकृतियां बनाना शुरु कर दिया। लगभग 100 से अधिक प्रोजेक्ट का निर्माण किया गया जो बड़ी उपलब्धि है।

विशेष – जिन बच्चों के फ़ाइल अच्छे रहे ऐसे हर कक्षा से टॉप 10 बच्चों को स्वतंत्रता दिवस और गणतंत्र दिवस के साथ अन्य खास अवसरों पर प्रमाण पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया ।

Scanned by CamScanner

14 मोर सुघ्घर वर्णमाला (छत्तीसगढ़ी में)

हेमन्त कुमार साहू (सहायक शिक्षक) शासकीय कन्या उ.मा. वि. अभनपुर

उद्देश्य – बच्चों में अक्षर (वर्णमाला) की समझ को पुख्ता करना।

लर्निंग आउटकम – हिन्दी के वर्णमाला के अक्षरों की आकृति और ध्वनि को पहचानते हैं।

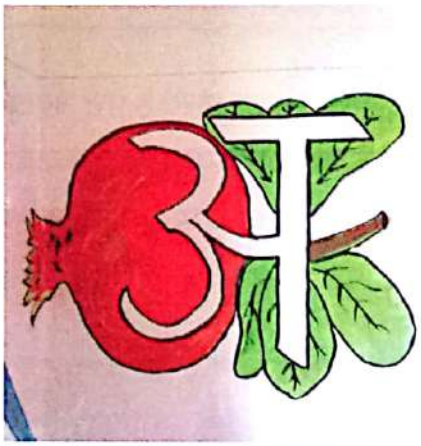

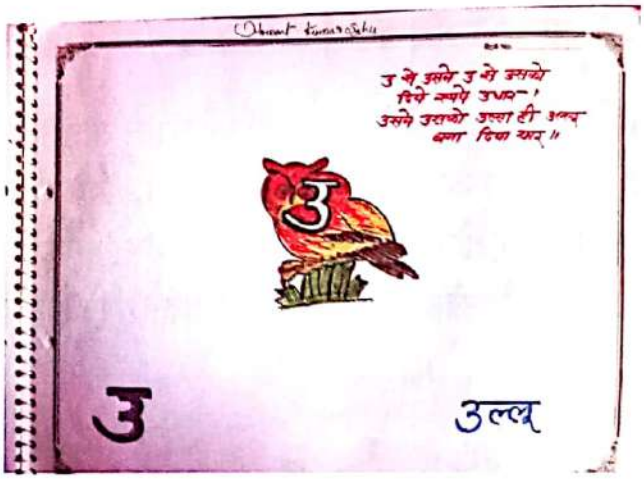

सामग्री – मोर सुघ्घर वर्णमाला जो कि छत्तीसगढ़ी में बनायी गई है सभी वर्णों की एक बुकलेट बनाई गई है। साथ ही वर्णों की वॉल पेंटिंग भी की गई है।

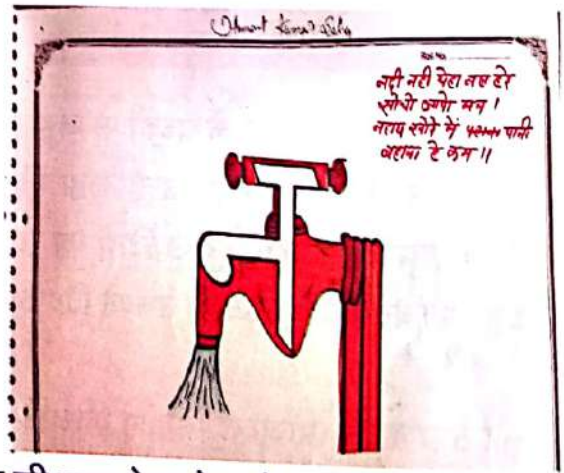

कार्यविधि – वर्तमान समय में बच्चे वर्णों को गीत की तरह रोज-रोज दोहराकर याद तो कर लेते हैं पर जैसे ही उन्हें बीच से किसी अक्षर को पूछा जाए तो कई बार बच्चे अक्षर नहीं पहचान पाते। अतः बच्चों में अक्षर ज्ञान को पुख्ता और अध्यापन को रोचक बनाने के उद्देश्य से मैंने '**मोर सुघ्घर वर्णमाला**' का निर्माण किया है।

Scanned by CamScanner

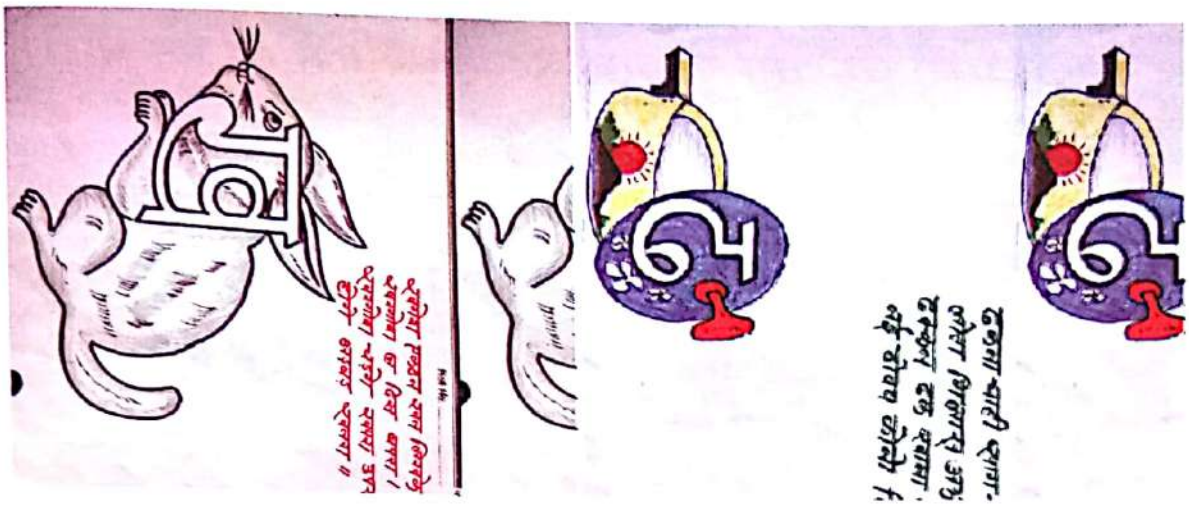

मोर सुघ्घर वर्णमाला को बनाने के लिए सबसे पहले सभी वर्णों के बहुत सारे शब्दों को संग्रहित किया गया फिर किसी एक अक्षर के विभिन्न शब्दों को मिलाकर एक ऐसी छत्तीसगढ़ी कविता रची गई, जिसे बच्चा आसानी से समझ सके। कविता छत्तीगढ़ी में बनाई गई क्योंकि बच्चे छत्तीसगढ़ी आसानी से समझ सकते हैं। फिर इन कविताओं का वाचन करवाया गया और बच्चों से दोहराने के लिए कहा गया। जिससे सुनने का कौशल विकसित हो, फिर सुनकर बोलने कहा गया ताकि बोलने का कौशल विकसित हो सके। तत्पश्चात् उस कविता में समाहित शब्दों में से वर्णों को पहचानने कहा गया, जिससे पढ़ने का कौशल विकसित हो सके तथा अंत में पहचान कर लिखने का अभ्यास करवाया गया। इस प्रकार मोर सुघ्घर वर्णमाला से भाषा सीखने के सभी कौशलों के विकास में सहायता मिलती है। साथ ही सभी कविताएँ केवल वर्णों की पहचान ही नहीं कराती बल्कि इन कविताओं में बहुत सी प्रेरणाप्रद बातें भी छुपी हुई है।

लाभ –

1. मोर सुघ्घर वर्णमाला से बच्चों की वर्णमाला पर समझ पुख्ता बनेगी।
2. इस बुकलेट से भाषा सीखने के चारों कौशलों का विकास किया जा सकता है।
3. छत्तीसगढ़ी में होने के कारण बच्चों को आसानी से समझ मे आ जाता है।
4. कविता के माध्यम से सीखना मनोरंजक तरीके से होता है ।
5. इस वर्णमाला से बच्चों को चित्रकला हेतु प्रेरित किया जा सकता है।

मेरा अनुभव – जब मोर सुघ्घर वर्णमाला द्वारा अध्यापन करवाया गया, बच्चे बहुत तेजी से अक्षरों को पहचान रहे थे और सीख रहे थे।

Scanned by CamScanner

15 बच्चों के नाम से जाने जाएँगे शाला के पेड़ पौधे।

रामसागर कोसले (शिक्षक) शास. पू. मा. शाला खैरझिटी (बिलाईगढ़)

उद्देश्य – पौधों की सुरक्षा व बच्चों को पर्यावरणीय ज्ञान कराना।

संबंध कक्षा या स्तर – पूर्व माध्यमिक।

लर्निंग आउटकम्स – बच्चे पर्यावरण के महत्व को समझकर पौधों की सुरक्षा व देखरेख करना सीख पाएँगे तथा पौधों के अंगों को आसानी से समझ पाएँगे तथा "वृक्ष हमारे मित्र" सार्थक शब्द को चरितार्थ करेंगे।

Scanned by CamScanner

क्रिया / गतिविधि– शाला प्रांगण में रोपित एक एक पौधों की जिम्मेदारी शाला में दर्ज प्रत्येक बच्चे को दी गई तथा बच्चों के नाम के अनुसार पौधे का नामकरण किया गया। जैसे- जानकी गुलमोहर, हिना अमरुद, सायना आम, भानू करंज, समशेर जामुन, प्रमोद आंवला, जयकिशन अमरुद आदि। सभी बच्चों ने पौधे अपने नाम कराने के लिए उत्साह दिखाया।

प्रत्येक दिन लघु अवकाश पर पढ़ाई के साथ-साथ 10-10 मिनट का समय देकर पौधों को पानी देना, खाद देना, साफ-सफाई व सुरक्षा का जिम्मा दिया गया जिसे सभी बच्चे उत्साहपूर्वक करने लगे। परिणाम स्वरुप शाला में आज लगभग 100 वृक्ष व पौधे जीवित हैं, जिससे शाला का वातावरण हरा-भरा, छायादार व सुन्दर है।

लाभ – इस कार्य को करने से हमे निम्नलिखित अपेक्षित लाभ देखने को मिला-

1. बच्चों को बैठने के लिए शाला प्रांगण पर वृक्षों की छाया मिली।
2. सभी बच्चों में पर्यावरण सुरक्षा के प्रति जिम्मेदारी की भावना जागृत हुई।
3. बच्चे स्वतः ही अपने पौधों में पानी, खाद, साफ सफाई, सुरक्षा व देखभाल करने लगे।
4. शाला का वातावरण हरा-भरा, छायादार व सुखद हो गया।

अनुभव – इस नवाचार से शाला के सभी बच्चों में पौधों व वृक्षों के प्रति जागरुकता दिखी बच्चे स्वप्रेरित होकर बाहर से पौधे लाकर शाला में लगाने भी लगे तथा गांव के लोगों के सोच में भी परिवर्तन देखने को मिला। अब बच्चे पेड़ की छांव में बैठकर समूह में प्रश्नोत्तर, वाद विवाद तथा अन्य शैक्षिक कार्यक्रम भी करते हुए नजर आने लगे हैं जिससे शाला का वातावरण पढ़ाई के साथ साथ पर्यावरणीय दृष्टि से भी खुशनुमा हो गया है। इस कार्य में शाला के सभी शिक्षकों, शाला प्रबंधन समिति व पंचायत का भी सहयोग विशेष प्रशंसनीय व सराहनीय रहा। अगर शासन इस ओर पहल करे तो प्रत्येक शाला में एक छोटा उद्यान बनाया जा सकता है।

Scanned by CamScanner

16 ट्रिक के माध्यम से याद रखना

बसंत दीवान (शिक्षक एल.बी.) शा.उच्च प्राथ.शाला चेरिया (अभनपुर)

उद्देश्य –

1. शिक्षण को रुचिपूर्ण बनाना।
2. याद करने / रखने में सरलता।
3. बच्चों में पढ़ने के प्रति प्रतिस्पर्धा की भावना जागृत करना।

सामग्री – ड्राइंग सीट, मार्कर पेन,कलर टेप आदि।

क्रिया / गतिविधि –

1. सर्वप्रथम पाठ्यगत बिंदु को याद करने हेतु ट्रिक बनाना और बच्चों द्वारा सामूहिक कार्य कर ड्राइंग सीट में उतारना।
2. ट्रिक का बच्चों द्वारा कक्षा में प्रदर्शन व बारी-बारी से पढ़ना।
3. याद हो जाने पर उसके द्वारा कक्षा में प्रदर्शन करना।
4. प्रार्थना में प्रतिदिन एक ट्रिक का प्रदर्शन।
5. जिस बच्चे का पूरा ट्रिक याद हो जाए उसे पुरस्कृत कर प्रोत्साहित करना।

इस गतिविधि से-दिये गये ट्रिक के आधार पर पाठ वस्तु को याद रख सकते हैं।

लाभ – 1. बच्चों को आसानी से लंबे समय तक याद रहता है। 2. याद करने मे आसानी होता है। 3. विषय रुचिकर हो जाता है। 4. सभी बच्चों की सहभागिता।

मेरा अनुभव – बच्चे कठिन बिंदुओं को आसानी से याद करते एवं याद रखते हैं।

Scanned by CamScanner

17 वायु दाब की समझ

कन्हैया साहू (सहायक शिक्षक) शा.प्राथमिक. शाला कानाकोट
विकासखण्ड - पलारी

आवश्यक सामग्री – तीन खाली पानी की बोतल, कटर, पतला प्लास्टिक पाइप, हॉट ग्लू, स्ट्रा आदि।

निर्माण विधि – बोतल के नीचे वाले हिस्से को कप के आकार में काटकर दूसरे बोतल में हॉट ग्लू से चिपका देंगे। बोतल के दोनों ढ़क्कनों को बीच से छेदकर उसमें स्ट्रा (जूस पाइप) लगाकर दोनों ढ़क्कनों को विपरीत दिशा में एक दूसरे से चिपका दिया। पाइप के आसपास ग्लू से भर दिया जिससे पानी का रिसाव न हो। मॉडल में दिखाए अनुसार प्लास्टिक पाइप को कप की आकृति वाले बोतल से ऊपरी बोतल और निचले हिस्से से नीचे वाली बोतल में पाइप लगाकर हॉट ग्लू से चिपका देंगे इस तरह वायुदाब का मॉडल तैयार हो गया।

कक्षा / स्तर – प्राथमिक एवं पूर्व माध्यमिक।
सम्बन्ध पाठ / विषय – विज्ञान / पर्यावरण।

गतिविधि / क्रिया – कप वाले हिस्से में पानी डालने पर पाइप से नीचे वाली बोतल पर जाता है। इस प्रकार नीचे वाली बोतल को आधा से ज्यादा पानी से भर दिया। उसके बाद मॉडल को उल्टा कर देंगे जिससे नीचे के बोतल का पानी ऊपरी बोतल में चला जायेगा। अब मॉडल को पुनः सीधा खड़ा कर देंगे। अब नीचे बोतल में केवल हवा रह जाएगी। फिर कप वाले हिस्से में थोड़ा पानी डालने पर नीचे बोतल में जाता हैं। नीचे बोतल में थोड़ा सा पानी जाने पर वहां की हवा पाइप से ऊपरी बोतल में

Scanned by CamScanner

जाती है जिसके कारण हवा का दाब बढ़ने पर ऊपरी बोतल का पानी पाइप से ऊपर कप वाले हिस्से से निकलने लगता है एवं वहाँ से नीचे बोतल में जाता है। ऊपरी बोतल में वायु दाब बढ़ने के कारण निरंतर पानी का प्रवाह होने लगता है।

लाभ –

1. कठिन विषय को सरलता से समझाया जा सकता है।
2. बच्चों में वैज्ञानिक अवधारणा की समझ बनती है।
3. बच्चों में जानने की इच्छा का विकास होता है।
4. सरल, रोचक व समझ स्थायी बनती है।

विशेष – इस प्रकार के विशेष विधि के प्रयोग से बच्चों में उत्सुकता बनी रहती है। जिससे शिक्षक का काम आसान हो जाता है।

मेरा अनुभव –

यह प्रयोग प्राथमिक एवं पूर्व माध्यमिक स्तर दोनों के लिए उपयोगी है। इसका उपयोग कर बच्चों को प्रायोगिक रुप से हवा के दबाव का अनुभव कराया जा सकता है।

.....

निम्न रेखा चित्र की सहायता से उपरोक्त मॉडल को बनाने में सुविधा हो सकती है।

हेरो का फौव्वारा :–

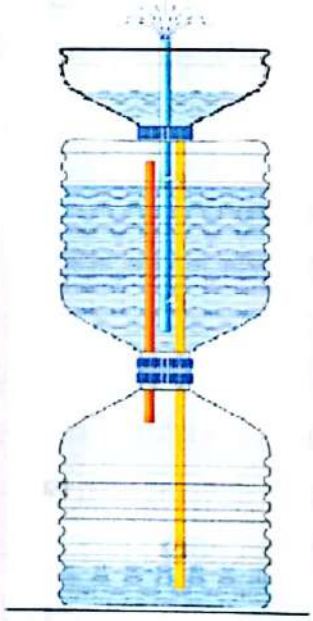

Scanned by CamScanner

18 सामुदायिक सहभागिता ने बदली विद्यालय की तस्वीर

शासकीय प्राथमिक शाला छिर्रा (बिलाईगढ़)

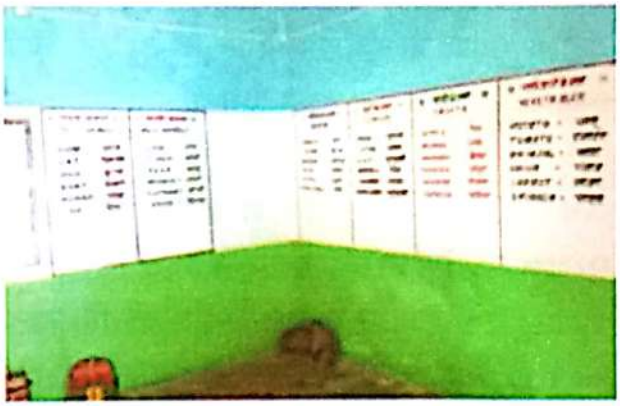

विकासखंड मुख्यालय बिलाईगढ़ से 8 किमी. दूरी पर मुख्य मार्ग पर स्थित है शासकीय प्राथमिक शाला छिर्रा । डॉ .ए.पी.जे. अब्दुल कलाम शिक्षा गुणवत्ता अभियान के प्रथम वर्ष मे शाला को डी-ग्रेड प्राप्त हुआ था। शाला को प्राप्त डी-ग्रेड के कारणो पर एस.एम.सी. एवं शिक्षकों द्वारा गहन अध्ययन एवं विचार विमर्श कर प्राथमिक शाला छिर्रा को ब्लॉक मे बेहतर स्कूल बनाने की दिशा में कार्य योजना बनाकर कार्य किया गया।

Scanned by CamScanner

इस लक्ष्य को पाने के लिए एसएमसी द्वारा पूरा सहयोग किया गया। स्कूल के मिशन स्टेटमेंट शैक्षिक वातावरण का निर्माण एवं गुणवत्ता युक्त शिक्षा पर कार्य करते हुए शाला के सभी कक्षाओं एवं शाला परिसर को प्रिन्टरिच वातावरण बनाया गया।

शिक्षक महेत्तर लाल देवाँगन द्वारा महासमुंद के पिथौरा ब्लॉक के प्राथ. शाला अँसुला, रायपुर के आरँग ब्लॉक के प्राथ.शाला बिरबिरा के अलावा जिला के अन्य स्कूलों का भ्रमण कर स्कूल, स्कूल मैनेजमेंट, अध्ययन-अध्यापन का अवलोकन किया गया।

तद्नुसार अपने स्कूल की शिक्षा व्यवस्था, शाला का वातावरण, शैक्षिक गुणवत्ता में सुधार किया गया। जो स्कूल पूर्व मे साधन एवं सुविधाहीन था , आज वह साधन एवं सुविधा सम्पन्न हो गया है। हैन्डपम्प खनन छत मरम्मत, अहाता निर्माण, बालिका एवं दिव्यांग शौचालय, सभी कक्षाओं में लाईट व पंखा लगाया गया है।
एसएमसी द्वारा 600 वर्ग फीट का साँस्कृतिक मंच बनाया गया। अहाता किनारे सुन्दर बागवानी बनाया गया जिसमें नीम,पीपल, गुलमोहर, आम, जामुन, बेल, करंज, पपीता, केला के पौधे के अलावा मदार, मोंगरा, गुलाब, गेंदा, सेवन्ती, कचनार, डगर, कनेर फूल के पौधे लगाए गए।

अब एल.ई.डी. के माध्यम से बच्चे पढाई कर रहे हैं। रुम-टू-रीड का आकर्षक एवं व्यवस्थित पुस्तकालय है जिसका संचालन बच्चे स्वयं करते हैं। शिक्षकों की अनुपस्थिति में कक्षा 3 के बच्चे कक्षा 1 एवं कक्षा 2 में रुम-टू-रीड की विधिवत कक्षाएं लेते हैं। यहां विद्यालय के बच्चे अंग्रेजी मे सेल्फ इंट्रोडक्शन देने में सक्षम हैं। कक्षा 5वीं के हीना कर्ष द्वारा चित्र कहानी का स्वतंत्र लेखन किया जा रहा है।

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ के तहत बालिका शिक्षा को प्रोत्साहित करने हेतु शिक्षक महेत्तर लाल देवांगन द्वारा पिछले 2 वर्षो से गरीब परिवार के 10 बालिकाओं को गोद लेकर शैक्षिक एवं आर्थिक सहयोग किया जा रहा है।

उपलब्धि :– राज्य चर्चा पत्र में कमीशीबाई में स्थान, रुम-टू-रीड सहभागिता सम्मान, डाइट रायपुर द्वारा उत्कृष्ट एसएमसी पुरस्कार, शिक्षक महेत्तर लाल देवाँगन को भारतीय दलित साहित्य अकादमी द्वारा डाँ. राधाकृष्णन शिक्षक अवार्ड, शासन द्वारा मुख्यमंत्री गौरव अलंकरण पुरस्कार, कबाड़ से नवाचार राज्य स्तरीय कार्यशाला में जिला का प्रतिनिधित्व।

विद्यालय अवलोकन :– जिला कलेक्टर, जिला सीईओ, एसडीएम, जनपद सीईओ, बीईओ, खण्ड चिकित्सा अधिकारी, परियोजना अधिकारी, डी.एम.सी एवं प्राचार्य और अकादमिक सदस्य डाइट रायपुर।

Scanned by CamScanner

19 चित्र के माध्यम से शिक्षण

केशव सेन (स.शि.) शासकीय प्राथमिक शाला नागझर पोंड़ (छुरा)

उद्देश्य – चित्र के माध्यम से पर्यायवाची शब्दों की समझ विकसित करना।

कक्षा / स्तर – प्राथमिक।

पाठ / विषय – हिन्दी / व्याकरण।

सामग्री – ड्राइंग शीट , कलर्स पेन।

निर्माण विधि – सर्वप्रथम बच्चों द्वारा ड्राइंग सीट में कुछ चित्र बनाकर ड्राइंग सीट को सजाया जाता है। फिर आगे निम्न गतिविधि कराई जाती है।

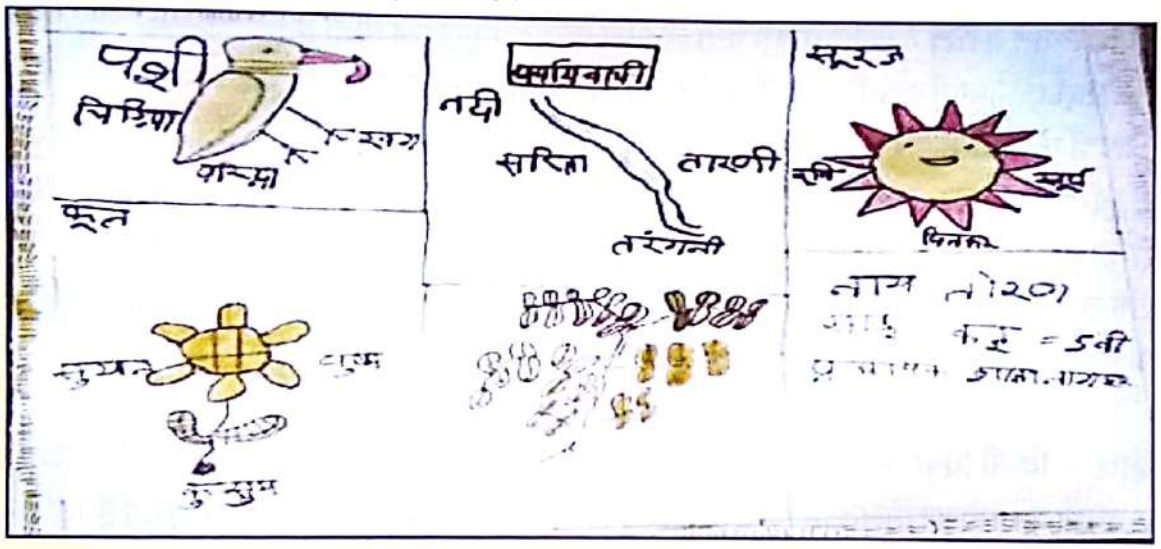

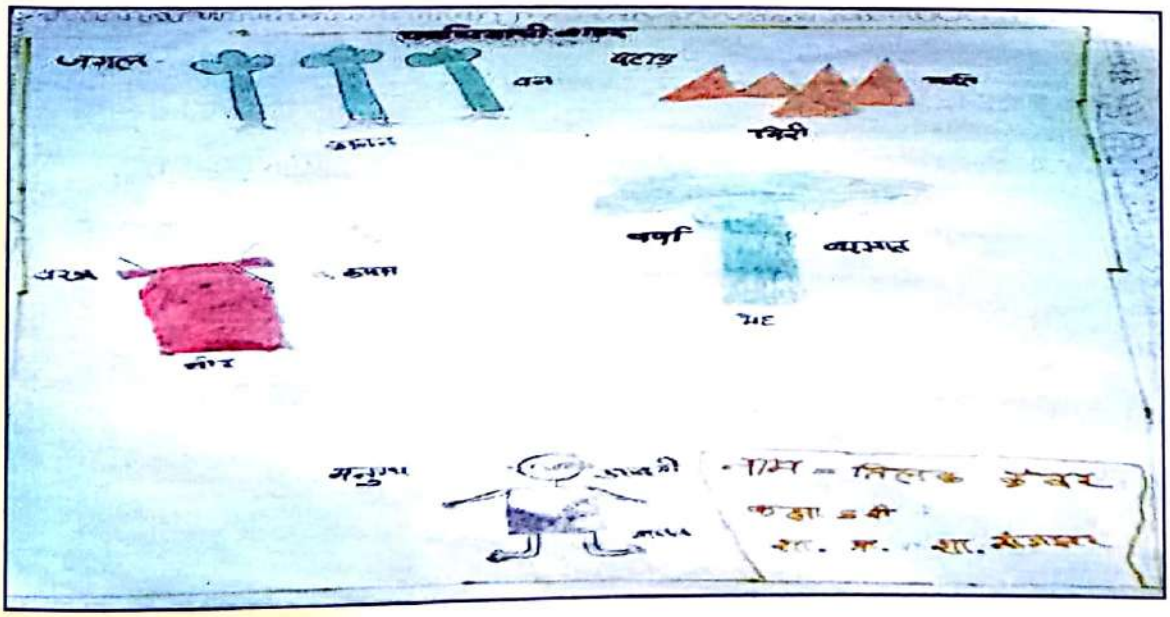

Scanned by CamScanner

क्रिया / गतिविधि –

अब ड्राइंग सीट पर बने चित्र पर पर्यायवाची शब्दों की गतिविधि की जाती है।
बारी-बारी से एक-एक बच्चे को बुलाकर किसी एक चित्र को पहचान कर उसका नाम और उसके पर्यायवाची शब्दों को लिखने को कहा जाता है।

यह गतिविधि सभी चित्रों के लिए पूरी हो जाने पर पर्यायवाची शब्द और चित्र चार्ट को कक्षा में प्रिंटरिच के रुप में लगा दिया जाता है जिससे बच्चे स्वतः ही जाकर अध्ययन करते हैं और पर्यायवाची शब्द को जानते हैं।

लाभ –

1. पाठ में दिये शब्दों के अर्थ और उसके पर्यायवाची शब्दों आसानी से समझ आ जाती है।
2. परिस्थिति व चित्र देखकर वाक्य बना लेने का कौशल विकसित होता है।
3. औसत व भाषा में कमजोर बच्चों के लिए अच्छी व रुचिकर तकनीक है।
4. बच्चों के शब्द भंडार में वृद्धि होती हैं।

मेरा अनुभव – हिन्दी भाषा शिक्षण में पाठ प्रस्तुत करना बहुत ही महत्वपूर्ण होता है। फिंगर रीडिंग तकनीक से बच्चे उबाऊ महसूस करते है। यह तकनीक रुचिकर है साथ ही कई कौशल एक साथ विकसित करता है।

विशेष – किसी विषय में नये तरीके से गतिविधि करने पर सीखने की गति तीव्र होती है। बच्चों को चित्र बनाने का अवसर मिलता है जिससे उनके सह-संज्ञानात्मक क्षेत्र का भी विकास होता है।

Scanned by CamScanner

20 गीत–कविता के माध्यम से बच्चों को हिंदी के वर्णों का अभ्यास

अविनाश पात्र (सहायक शिक्षक) शा.प्रा.शाला लदरा (देवभोग)

उद्देश्य – गतिविधि और गीत-कविता के द्वारा हिन्दी के वर्णों का अभ्यास कराना।

संबंध कक्षा या स्तर – पहली।
विषय / पाठ – हिन्दी।

लर्निंग आउटकम – हिन्दी के वर्णमाला के स्वर अक्षरों की आकृति और 'ध्वनि' एवं स्वर प्रतीक को पहचानते हैं।
चार्ट का निर्माण – उपरोक्तानुसार चार्ट या दीवाल पर चित्र बना लेते हैं।

Scanned by CamScanner

कविता निर्माण –

स्वर वर्णों को सीखने के लिए स्वरचित कविता का उपयोग किया गया।
जो गतिविधि में दिया गया है।

क्रिया / गतिविधि –

अ से अः तक के वर्णों के अभ्यास और उसकी स्थायी समझ के लिए एक रोचक कविता का प्रयोग किया गया है। इस कविता को शिक्षक के गाने के बाद बच्चे बारी बारी से दोहराते हैं।

अ से अनार खाते है, आ से आम खाते है।
इ से इमली खट्टी है, ई से ईख मीठा है।
उ से उल्लू उड़ता है, ऊ से ऊँट चलता है।
ऋ से ऋषि तपस्या करते है।
ए से एड़ी पैरों की, ऐ से ऐनक दादी की।
ओ से ओखली पत्थर की, औ से औरत घर-घर की।
अं से अंगूर गोल-गोल, अः का घर खाली कभी नही देना गाली।

लाभ –

1. बच्चों में हिन्दी के वर्णों का ज्ञान होता है।
2. बच्चों के एकाग्रता बनी रहती है। जिससे वे जल्दी सीखते हैं।
3. बच्चों में उत्साह का माहौल रहता है।
4. सभी बच्चे रुचि लेकर इस गतिविधि में भाग लेते हैं।
5. कविता के लयबद्ध उच्चारण होने से कक्षा का वातावरण गीतमय हो जाता है।

मेरा अनुभव –

हिन्दी विषय के वर्णों से परिचित कराए जाने के लिए उक्त गतिविधि को बच्चों को दोहराने के लिए कहा गया। बच्चों ने उत्साहित होकर गतिविधि में सहभागिता की और वर्णों एवं मात्राओं के प्रतीकों को समझा।

Scanned by CamScanner

21 वर्ण, शब्द , वाक्य का अभ्यास (विशेष अभ्यास कार्ड)

सुश्री पुष्पा शुक्ला (सहायक शिक्षक) शास. प्राथ. शाला करचिया (देवभोग)

उद्देश्य – कविता / कहानी आदि की छोटी इकाइयों जैसे - वर्ण, शब्द , वाक्य का अभ्यास कराना।

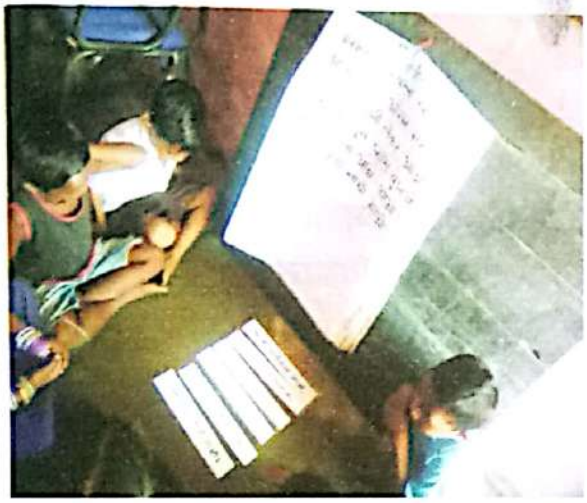

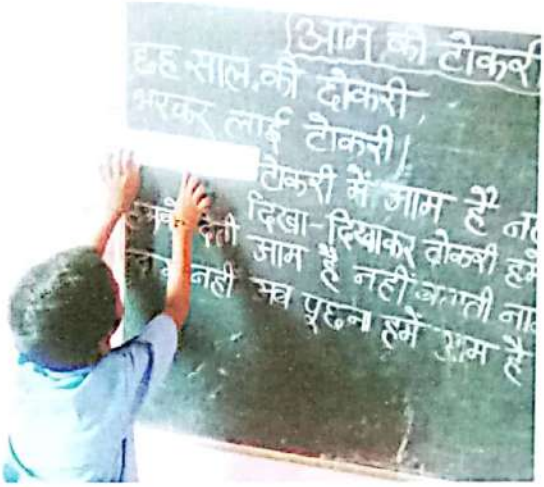

सामग्री – फ्लिप चार्ट / ड्राइंग सीट या ब्लैक बोर्ड पूरी कहानी या कविता लिखने के लिए एवं वाक्य पट्टी व शब्द कार्ड। (प्लास्टिक कोटेड किया हुआ),(टाईप कराकर या हाथ से लिखा हुआ भी बना सकते हैं।)

सम्बंधित कक्षा / स्तर – प्राथमिक (पहली - दूसरी)

सम्बंधित पाठ / विषय – हिन्दी

लर्निंग आउटकम – प्रिंट (लिखा हुआ या छपा हुआ) में मौजूद अक्षर, शब्द और वाक्य के इका यों को पहचानते हैं।

जैसे-- "मेरा नाम विमला है।" बताओ यह कहां लिखा हुआ है..? / इसमें "नाम" कहां लिखा हुआ है... ?? / "नाम" में "म" पर उंगली रखो ।

क्रिया / गतिविधि –

इस गतिविधि में कार्ड की सहायता से वाक्य का मिलान करा सकते हैं। जिससे अलग-अलग इकाईयों की पहचान होती है। सर्वप्रथम किसी वाक्य को ब्लैकबोर्ड पर लिख दिया जाता है। अब एक छात्र / छात्रा के द्वारा उस वाक्य को देखकर या पढ़कर रखे गये बहुत से वाक्य पट्टियों में से कोई एक वाक्य पट्टी उठाकर मिलान कराया जाता है। जिस पट्टी को विद्यार्थी मिलान करते हैं उस समय ब्लैकबोर्ड और पट्टी दोनों वाक्य को क्रमशः पढ़ने के लिए कहा जाता है। अब पुनः इस गतिविधि को आगे बढ़ाया जाता है। उसी छात्र / छात्रा को एक वाक्य पट्टी दिया जाता है और उसी वाक्य पट्टी का दूसरा कापी भी दिया जाता है जिसमें हर शब्द अलग-अलग होते हैं। अब छात्र / छात्रा को पूरे

Scanned by CamScanner

वाक्य पट्टी को पढ़-पढ़कर अलग-अलग शब्दों से हर शब्द को मिलान करने के लिए कहा जाता है। विद्याथ क्रमशः हर शब्द को मिलान करते हैं। जब पूरा वाक्य मिलान हो जाता है तो पूर्ण पट्टी और कटे हुए शब्दों से बने वाक्य पट्टीदोनों वाक्यों को बारी-बारी पढ़ने के लिए कहा जाता है।

लाभ –

1. बच्चों में शब्द और अक्षरों की स्थाई समझ बनेगी ।
2. बच्चे स्वयं से वाक्य बना सकेंगे।
3. बच्चों को पढ़ने का अभ्यास होता है।
4. बच्चों को अलग-अलग इका यों की पहचान होती है।
5. बच्चों के शब्द भण्डार में वृद्धि होती है।

मेरा अनुभव – प्राथमिक विद्यालय के बच्चों के लिए यह कार्ड/गतिविधि बहुत की लाभकारी होती है। इससे बच्चों में वाक्य पढ़ने, लिखने और बनाने के कौशल का विकास होता है।

विशेष - इससे बच्चो को रुचिकर शिक्षा मिलती हैं। बच्चे उत्साहित होकर इस गतिविधि में भाग लेते हैं और कार्ड का उपयोग करते है।

Scanned by CamScanner

22 स्थानीय भाषा में कहानी

सुश्री पुष्पा शुक्ला (सहायक शिक्षक) शास. प्राथ. शाला करचिया (देवभोग)

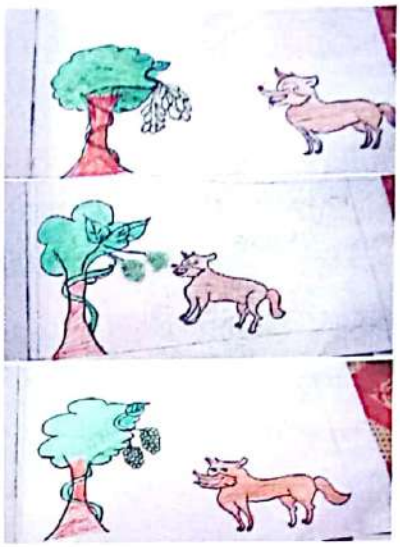

उद्देश्य – कही गई बात को सुनकर समझेंगे और अपनी भाषा में प्रतिक्रिया व्यक्त कर पाएंगे।

आवश्यक सामग्री – ड्राइंग सीट, कलर पेन, मार्कर आदि।

निर्माण विधि – विभिन्न चित्र बना कर उस चित्र के संदर्भ में स्थानीय भाषा में कहानी लिखा जाता है।

सम्बंधित पाठ / विषय – हिन्दी

कक्षा / स्तर – पहली एवं दूसरी

लर्निंग आउटकम –

1.बातचीत के लिए घर की भाषा और स्कूल की भाषा का उपयोग करते हैं।

जैसे : कविता, कहानी सुनाना, जानकारी के लिए प्रश्न पूछना, निजी अनुभवों को साझा करना।

2. सुनी हुई सामग्री (कविता, कहानी आदि) के बारे में बातचीत करते हैं, अपनी राय देते हैं और प्रश्न पूछते हैं।

3. बच्चे चित्र के सूक्ष्म और प्रत्यक्ष पहलुओं का बारीकी से अवलोकन करते हैं।

क्रिया / गतिविधि – इस गतिविधि में बच्चों को चित्र और स्थानीय भाषा में कहानी सुनाकर बच्चों को प्रफुल्लित और एकाग्रचित किया जाता है। बच्चों ने अब तक जिस भाषा में अपने विचारों को अभिव्यत करना सीखा है, जिस भाषा द्वारा दुनिया के बारे में अपनी समझ बनाई है। कक्षा में बच्चों को उनकी मातृभाषा का प्रयोग करने का अवसर दें। इसके लिए हमें न केवल उनकी भाषा का बच्चों से बात-चीत में प्रयोग करना चाहिए बल्कि उनकी भाषा में पठन सामग्री भी उपलब्ध कराएँ साथ ही लेखन में भी उनकी भाषा को स्थान दें।

अतः मैंने प्रारम्भिक कक्षाओं के लिए कहानी-कविता उनकी भाषा में बना । जिसका बहुत अच्छा प्रभाव यह दिखा कि बच्चे अपनी भाषा में कहानियों को रुचि लेकर सुनते समझते हैं और पढ़ने को इच्छुक भी होते हैं।

लाभ –

1. कहानी के द्वारा शिक्षा अर्जित करेंगे। 2.बच्चे कहानी से एकाग्र रहते हैं।
3. बच्चे कहानी सुन कर प्रफुल्लित होते हैं। 4.बच्चे विद्यालय के प्रति आकर्षित होते हैं।
5. विद्यालय में स्थानीय भाषा के उपयोग से ग्रामीण क्षेत्रों के बच्चों को घर जैसा माहौल मिलता है।

मेरा अनुभव - शिक्षा के क्षेत्र में कहानी महत्वपूर्ण स्थान रखता है। इससे बच्चों को अपने साथ जोड़े रखने में आसानी होती है।

विशेष – बच्चों ने कहानी सुनने के बाद और कहानी सुनने की इच्छा जाहिर किया। कुछ बच्चों ने अपने घर में बड़ो से सुनी हुई कहानी कहने का भी प्रयास किया।

Scanned by CamScanner

23 खंडो का खेल।

श्रीमती सुचिता साहू (सहायक शिक्षक) शास. प्राथ. शाला तेलीबांधा

उद्देश्य – खेल खेल में गिनती सीखना।

सामग्री– पुट्ठे का एक ब क्स, कोई भी पुराना कपड़ा, कैंची, चिपकाने के लिए टेप, स्टेपलर।

निर्माण विधि – कपड़े रखने का एक पुराना ब क्स लेंगे। उसी ब क्स में ही पुट्ठे की पट्टी काट कर टेप से चिपका कर खंड बनायेंगे और पुट्ठे के ऊपर से कोई भी पुराना कपड़ा स्टेपल कर देंगे अब खंड वाला बॉक्स तैयार है।

कक्षा में जितने बच्चे होंगे,उससे दुगुना या तिगुना कंचा / इमली का बीज या अपनी सुविधानुसार वस्तु ले सकते हैं।

कक्षा / स्तर – पहली

सम्बंधित पाठ / विषय – गणित

लर्निंग आउटकम -

1 से 20 तक की संख्याओं पर कार्य करते हैं -

1 से 9 तक की संख्या का उपयोग करके वस्तुओं को गिनते हैं।

क्रिया / गतिविधि - अपनी सुविधानुसार पुट्ठे के बॉक्स से बनाए गए हर खंड में बच्चे पहले कंचे को डालते हैं। उसके बाद किसी भी एक खंड में कंचे को एक एक करके गिनते हैं।

लाभ –

1. सीखने प्रति बच्चों की रुचि बढ़ रही है।
2. सीखने के प्रति बच्चों में उत्साह का माहौल रहता है।
3. विद्यालय की रोचक वातावरण से बच्चे विद्यालय ओर आकर्षित होते हैं।
4. बच्चे एकाग्र होकर सीखते हैं।
5. बच्चे निर्भीकता पूर्वक गतिविधि में भाग लेते हैं।

मेरा अनुभव – कक्षा पहली के बच्चे स्कूल आने के लिए डरते हैं तथा रोते-गाते स्कूल आते हैं। लेकिन इस गतिविधि से बच्चों के चेहरे में खुशी की अलग ही रौनक देखने को मिली और वे उत्सुक व भयमुक्त होकर गतिविधि में भाग लिए।

विशेष – गतिविधि में बच्चों ने बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया तथा बच्चों को खेल के माध्यम से गिनती सीखना आसान हुआ।

Scanned by CamScanner

24 सौर ऊर्जा (सोलर पैनल) का प्रदर्शन

श्रीमती सुचिता साहू (सहायक शिक्षक) शास. प्राथ. शाला तेलीबांधा

उद्देश्य – सौर ऊर्जा (सोलर पैनल) के माध्यम से सूर्य के प्रकाश द्वारा उत्पन्न ऊर्जा और उसके उपयोग की समझ विकसित करना।

कक्षा स्तर - चौथी, पांचवी

विषय – विज्ञान

आवश्यक सामग्री – सौर उर्जा (सोलर पैनल), पतली तार , चार्जर पिन, मोबाइल, मोटर पंखा।

निर्माण विधि –

1. पंखा चलाने हेतु -

सर्वप्रथम सोनल पैनल के दोनों सिरों को पतले तार से जोड़ा जाता है उसके बाद मोटर के धनात्मक सिरे वाले तार को सोलर पैनल के धनात्मक सिरे वाले तार से जोड़ा जाता और मोटर के ऋणात्मक सिरे वाले तार को पैनल के ऋणात्मक वाले तार के सिरे से जोड़ा जाता है। अब मोटर में पंखा लगाके धूप में ले जाया जाए तो पंखा चलने लगता है।

2. मोबाइल चार्जिंग हेतु -

सर्वप्रथम सोलर पैनल के धनात्मक और ऋणात्मक सिरे को पहले तार से जोड़ा जाता है पुराने मोबाइल चार्जर के चार्जिंग होने वाले सिरे को काटेंगे,फिर अंदर से दो पतले तार निकलते हैं जोकि धनात्मक ऋणात्मक तार होता है लाल तार धनात्मक और काला तार ऋणात्मक होता है अब सोलर पैनल में जोड़े गए धनात्मक तार को धनात्मक सिरे वाले लाल तार से जोड़ेंगे और ऋणात्मक सिरे वाले तार को काले ऋणात्मक सिरे वाले तार से जोड़ेंगे अब मोबाइल को चार्जर पिन में लगाकर यदि धूप में ले जाते हैं तो मोबाइल चार्जिंग होना शुरु हो जाता है।

Scanned by CamScanner

क्रिया / गतिविधि – यदि सोलर पैनल से जुड़े पंखा को छाया वाले स्थान से (सूर्य) प्रकाश वाले स्थान में ले जाएँ तो पंखा चलने लगता है। सोलर पैनल से संलग्न चार्जिंग पिन को मोबाईल से जोड करके धूप में ले जाए तो मोबाईल चार्जिंग होने लगता है। लाइट या बिजली नहीं होने पर उस स्थिति में सौर ऊर्जा द्वारा सूर्य के प्रकाश के माध्यम से विद्युत ऊर्जा उत्पन्न किया जा सकता है। बड़े बड़े घरों, ऑफिस, हॉस्पिटल, बैंक आदि जगहों पर सोलर पैनल लगे होते हैं जिससे सौर ऊर्जा का विद्युत ऊर्जा में रुपान्तरण होता है व बिजली की बचत होती है।

लाभ –

1. इस प्रयोग से बच्चे और आसानी से सोलर पैनल के बारे में जानेंगे।
2. बच्चों में ज्ञान की वृद्धि होती है। बच्चों में समझ विकसित होती है।
3. कुछ नया करने की इच्छा बढ़ती है।
4. बच्चे अपने दैनिक जीवन में उपयोग कर सकते हैं।

अनुभव – बच्चों को लंबे समय तक कॉन्सेप्ट याद रहता है। बच्चों में जिज्ञासा, कल्पना करने की शक्ति बढ़ती है।

विशेष – इस तरह की गतिविधि में बच्चे रुचि लेते हैं जिससे बच्चों में चिंतनशीलता विकसित होती है तथा बच्चे गतिविधि में रुचि लेते हैं। विषय को समझने में बच्चों को मदद मिलती है। शिक्षण के लिए यह तरीका उपयोगी है।

Scanned by CamScanner

25 डाय नग टेबल (स्वयं के व्यय से)

श्रीमती सुनीला फ्रेंकलिन (स.शि.एल.बी.) शास. प्राथ. शाला कचना

उद्देश्य – बच्चों को मध्यान्ह भोजन परोसकर व आरामदेह स्थिति में कराना ।
बच्चे टेबल का उपयोग पढ़ाई - लिखाई और ड्राइंग पेंटिंग में भी करते हैं।

सामग्री – इसमे लगभग 22500 रु का खर्च आया है। इस सामग्री के निर्माण में शिक्षिका द्वारा एवं कुछ सहयोग SMC सदस्य श्री जगजीवन राम बारले द्वारा किया गया है।

गतिविधि / क्रिया – शिक्षिका ने जब देखा कि बच्चे झुककर भोजन करते हैं और उनको तकलीफ होती है। तो शिक्षिका द्वारा स्व-प्रेरित होकर इस बहु उपयोगी टेबल का निर्माण कराया गया। इस निर्माण कार्य में जन सहयोग भी प्राप्त हुआ। टेबल में बैठकर बच्चे बहुत ही आराम महसूस करते हैं। मध्यान्ह भोजन के अलावा बच्चे टेबल का उपयोग पढ़ाई - लिखाई और ड्राइंग पेंटिंग में भी करते हैं।

लाभ –

1. MDM के लिए आसानी होती है।
2. कमर पीठ दर्द नहीं होता है।
3. बच्चे पढ़ाई - लिखाई और पेटिंग भी इस टेबल पर कर लेते हैं।

मेरा अनुभव – निश्चित तौर पर इस टेबल के निर्माण से बच्चों को लाभ हो रहा है। पहले के मुकाबले अब आराम है।

विशेष – इसमें जन सहयोग भी मिला जो बहुत ही महत्वपूर्ण है।

Scanned by CamScanner

26 बारह खड़ी अभ्यास हेतु गतिविधि

श्रीमती विनती श्रीवास्तव (व्याख्याता) डाइट, रायपुर

उद्देश्य : खेल-खेल में बारह खड़ी अभ्यास हेतु अभ्यास।
स्तर : प्राथमिक स्तर

आवश्यक सामग्री : पुराना गत्ता, सफेद या रंगीन चार्ट पेपर, कैंची, फेवीकोल, स्केच पेन, बाँस की पतली डंडी, प्लास्टिक बॉटल आदि।

निर्माण : रंगीन या सफेद चार्ट पेपर पर एक ही रंग के स्केच पेन से मात्राओं को चित्रानुसार लिख लें। अब अक्षर की संख्या में एक ही साइज के गत्ते को गोलाकार या चौकोर (वर्गाकार) आकृति में काट लें रंगीन चार्ट पेपर पर स्केल पेन से अक्षर बनाकर काट लें और फेवीकोल की सहायता से गत्ते के टुकड़ों पर चिपका दें और पकड़ने के लिए बाँस की डंडी लगा दें। इस प्रकार टी.एल.एम. तैयार हो गया।

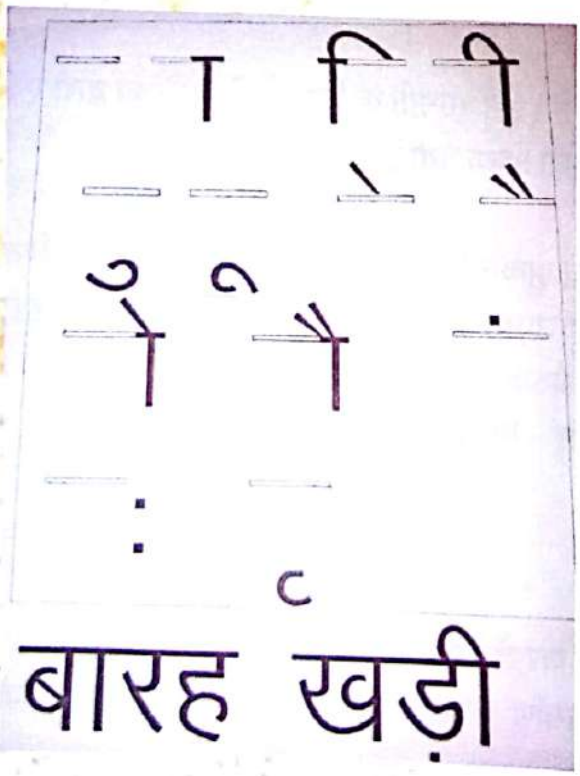

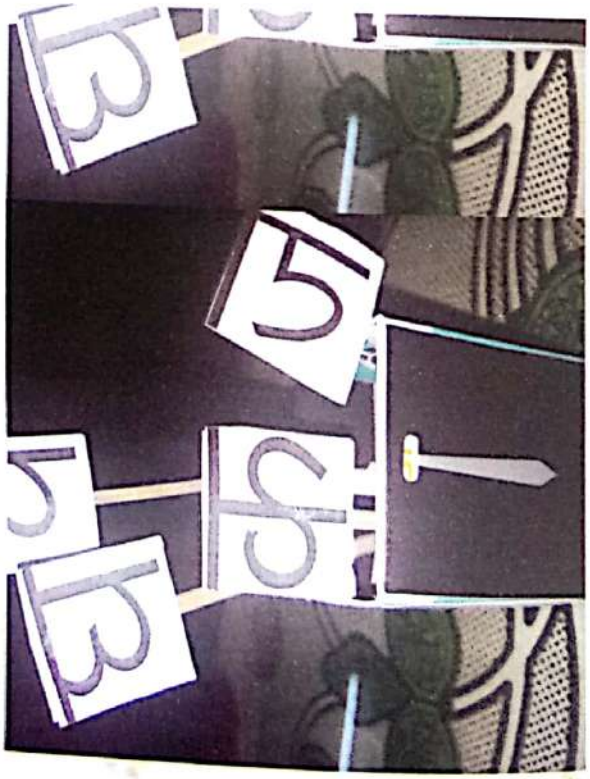

Scanned by CamScanner

गतिविधि : सबसे पहले मात्रा लिखे चार्ट को कक्षा में दीवार पर लगा दें। अक्षर स्टैंड को भी वहीं पर रख लें। फिर एक बच्चे को बुलाएँ और एक अक्षर डंडी उठाने को कहें।

1. वह बच्चा अक्षर को सभी मात्राओं पर बारी-बारी से रखेगा और अक्षर को मात्राओं के साथ जोड़कर उच्चारण करेगा उसके पीछे सभी बच्चे दोहराएँगे।
2. बच्चा अक्षर डंडी को किसी भी मात्रा पर रखेगा और समूह में से कोई बच्चा उसे बताएगा।

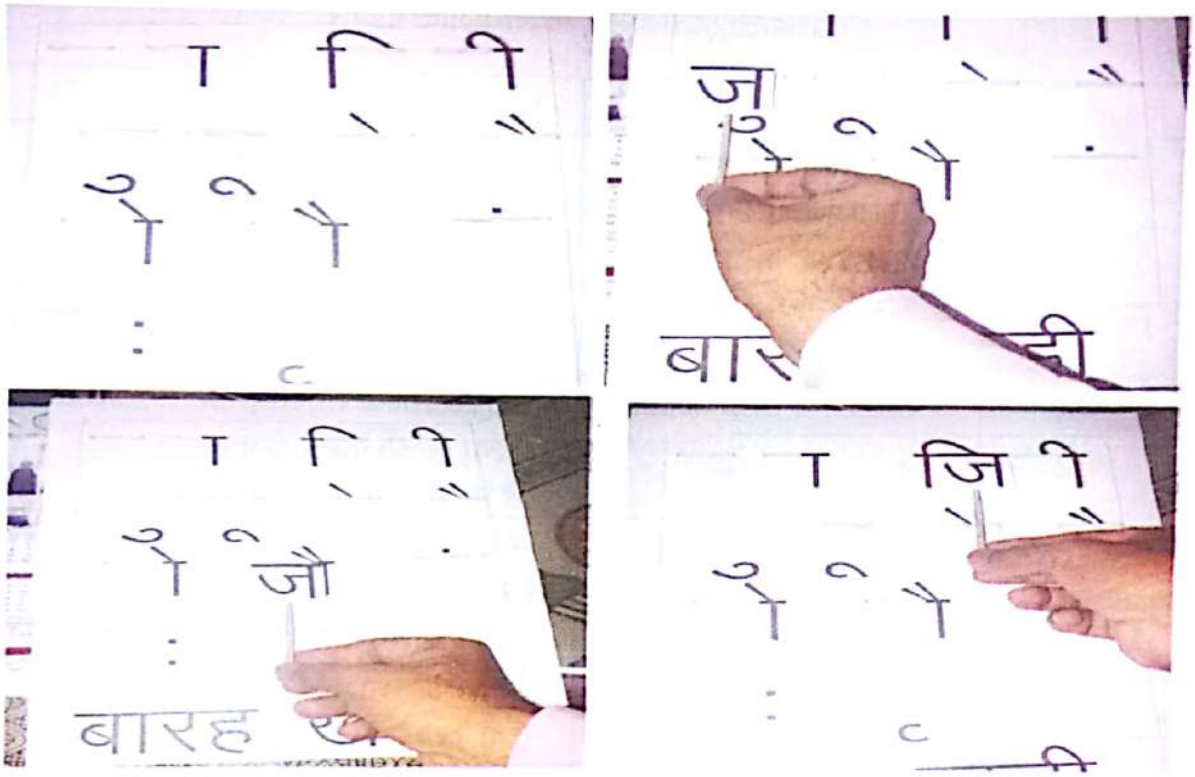

लाभ :

1. बारह खड़ी को समझने में आसानी होगी।
2. मात्राओं पर समझ स्थायी होगी।
3. बारह खड़ी सीखना रुचिकर लगेगा।

Scanned by CamScanner

डाइट रायपुर के अंतर्गत आने वाले जिलों रायपुर, गरियाबंद एवं बलौदाबाजार के एडमिन समूह का परिचय

राज्य एडमिन सुश्री पुष्पा शुक्ला (स.शि.) शासकीय प्राथमिक शाला करचिया वि.ख.-देवभोग, जिला-गरियाबंद (छ.ग.)

संभाग एडमिन श्री चितेश्वर प्रसाद वर्मा (उच्च. वर्ग शिक्षक) शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला देवरीकला (कसडोल), जिला-बलौदा बाजार

क्र.	जिला	जिला एडमिन	वि.ख. एडमिन
1	रायपुर	1. श्रीमती सुनीला फ्रेंकलिन (स.शि.एल.बी.) शास. प्राथ. शाला कचना 2. श्रीमती सुचिता साहू (स. शि.) शास. प्राथ. शाला तेलीबांधा	आरंग - श्री मोरध्वज वर्मा (व्या.) शा.उ.मा.वि. कचना अभनपुर - श्री बसंत दीवान (शि.) पू.मा.शा.चेरिया धरसीवा - श्रीमती अंकिता तिवारी (स.शि.)शा.प्रा.शा.मठपुरैना तिल्दा - श्री गजेन्द्र देवांगन (स.शि.) शा.प्रा.शा. नवागांव
2	गरियाबंद	1. श्री लोकेश्वर सोनवानी (स.शि.) शा. प्राथ. शाला बेन्दकूरा	गरियाबंद - श्री देवानन्द साहू (स.शि.) शा.प्रा.शा. कोटरीछपर छुरा - श्री केशव सेन (स.शि.)शा.प्रा.शा. नागझर फिंगेश्वर - श्री पूरन लाल साहू (व्या.) शा.उ.मा.वि. बिजली देवभोग - श्री यषवंत बघेल (स.शि.) शा.प्रा.शा. गौटियापारा मैनपुर - श्री चित्रसेन पटेल (प्र.पा.) शा.प्रा.शा. देहारगुड़ा
3	बलौदा बाजार	1. श्रीमती ऋतु वर्मा (शिक्षक) शास.क.पू. मा. शाला हथबंद 2. श्री गोपाल प्रसाद पटेल (स.शि.) शास.पू. मा. शाला मगरचबा	बलौदा बाजार - श्री रविशंकर फूटान (सी.ए.सी.) संकुल केन्द्र पनगांव बिलाईगढ़ - पंकज कुमार दुबे (प्र.पा.) शा.प्रा.शा. मधुवनकला भाटापारा - श्री विरेन्द्र सिंग वर्मा (प्र.पा.) शा.प्रा.शा. धुर्राभाठा कसडोल - रोहित पटेल (शि.) शा.पू.मा.शा. नगेड़ी पलारी - श्री मुकेश कुमार (उ.व.शि.) शा.पू.मा.शा. छड़िया सिमगा - श्रीमती पद्मनी देवांगन (स.शि.) शा.प्रा.शा.हथबंध

Scanned by CamScanner

सामाजिक विज्ञान महोत्सव जिला मुख्यालय बलौदाबाजार में डाइट रायपुर व अजीम प्रेम जी फाउण्डेशन के संयुक्त तत्वावधान में जिला शिक्षा अधिकारी बलौदाबाजार एवं जिला मिशन समन्वयक रा.गा.शि.मि. बलौदाबाजार के विशेष सहयोग से आयोजित किया गया। जिसमें बलौदाबाजार जिले में पदस्थ पूर्व माध्यमिक शालाओं के सामाजिक विज्ञान के सभी शिक्षकों द्वारा अवलोकन किया गया।

Scanned by CamScanner

रायपुर जिला के विद्यालयों में किए गए नवाचारी गतिविधियाँ

Scanned by CamScanner